

जनपद स्तरीय संपूर्ण समाधान दिवस जिलाधिकारी की अध्यक्षता में सम्पन्न

दैनिक बुद्ध का संदेश बलरामपुर। आमजनमानस की शिकायतों एवं समस्याओं के प्रभावी ढंग से निस्तारण हेतु संपूर्ण समाधान दिवस का आयोजन जनपद के तीनों तहसीलों में संपन्न हुआ। तहसील तुलसीपुर में जिलाधिकारी डॉ० महेन्द्र कुमार व पुलिस अधीक्षक केशव कुमार ने संपूर्ण समाधान दिवस में सुनी फरियादियों की शिकायतें तथा सम्बन्धित अधिकारियों को समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण जांच कर निस्तारण करने का निर्देश दिया। संपूर्ण समाधान दिवस में जनता की समस्याओं को सुनते हुये जिलाधिकारी ने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया कि आई०जी०आर०एस० पोर्टल पर किसी भी प्रकार की शिकायत लम्बित न रहे, शासन एवं जनपद

स्तर पर निरंतर इसकी निगरानी की जा रही है। शिकायतकर्ता राजमती पत्नी द्वारिका निवासी शिवपुरा कल्यानपुर विकास खण्ड तुलसीपुर पीएम आवास की शिकायत तथा अवध राम पुत्र नैपाल ग्राम जनकपुर पैमाइस के सम्बन्ध में शिकायत की गयी जिस पर जिलाधिकारी द्वारा नराजगी व्यक्त करते हुये सम्बन्धित अधिकारियों को शिकायती प्रार्थना पत्रों का निस्तारण करने का निर्देश दिया। उन्होंने सम्बन्धित विभागध्यक्षों को सख्त निर्देश दिया कि गम्भीरता पूर्वक, पारदर्शिता के साथ जांचकर निष्पक्ष रिपोर्ट करें जिससे आने वाले फरियादियों को न्याय पूर्ण समाधान हो सके।



को संयम, जिम्मेदारी के साथ निस्तारण किया गया, अन्य मामलों का स्थलीय सत्यापन कर निस्तारण किया जायेगा। इस दिवस 20 शिकायती प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए जिसमें मौके पर 06 प्रार्थना पत्रों का निस्तारण किया गया, अन्य मामलों का स्थलीय सत्यापन कर निस्तारण किया जायेगा। इस दिवस 20 शिकायती प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए जिसमें मौके पर

मंगलेश दूबे, तहसीलदार प्रमेश कुमार, सीएमओ डा० सुशील कुमार, डीडीओ गिरीश चन्द्र पाठक, डीपीआरओ, सीओ राधावेन्द्र सिंह, डीआईओएस गोविन्दराम, उप निदेशक कृषि डा० प्रभाकर सिंह, जिला प्रवेशन अधिकारी सतीश चन्द्र, ईओ तुलसीपुर, जिला पूर्ति अधिकारी व अन्य जनपद स्तरीय अधिकारी कारीधर्म चारीगण उपस्थित रहे। तहसील उत्तरौला में अपर जिलाधिकारी प्रदीप कुमार व अपर पुलिस अधीक्षक नम्रिता श्रीवास्तव की अध्यक्षता में संपूर्ण समाधान दिवस 20 शिकायती प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए जिसमें मौके पर

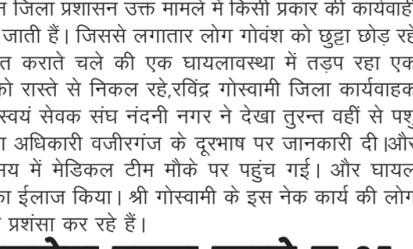
01 प्रार्थना पत्र का निस्तारण किया गया। इस अवसर पर एसडीएम उत्तरौला संतोष कुमार ओझा, सीओ उदयराज सिंह व अन्य तहसील के अधिकारी कर्मचारीगण मौजूद रहे। तहसील बलरामपुर संपूर्ण समाधान दिवस एसडीएम राजेन्द्र बहादुर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस दौरान फरियादियों द्वारा 29 प्रार्थना पत्र दिये गये, जिसमें से मौके पर 03 प्रार्थना पत्रों का निस्तारण कर दिया गया, शेष प्रार्थना पत्रों का निस्तारण संबंधित विभागों के अधिकारी स्थलीय सत्यापन करते हुए तीन दिवस के भीतर करना सुनिश्चित करेंगे। इस दौरान सीओ सदर, सीओ देहात, तहसीलदार रामाश्रय, नायब तहसीलदार, व अन्य तहसील स्तरीय अधिकारी कर्मचारीगण मौजूद रहे।

नेटवर्क की समस्या से मोबाइल उपभोक्ता परेशान मोबाइल से नहीं हो पा रही है बात

दैनिक बुद्ध का संदेश अलावल देवरिया गोंडा। इस समय मनकापुर ब्लॉक के मोतीगंज क्षेत्र के लोग मोबाइल नेटवर्क की समस्या से काफी परेशान हैं। नहीं हो पा रही है कहीं बात वही नेटवर्क की समस्या से लोग नेट भी नहीं इस्तेमाल कर पा रहे हैं। बताते चलें कि लगभग 1 माह से मोतीगंज क्षेत्र वोडाफोन, जिओ सहित अन्य मोबाइल का नेटवर्क गायब रहता है जिससे क्षेत्र के लोग काफी परेशान हैं। वहीं नेटवर्क की समस्या से डाकघर में बराबर कार्य नहीं हो पा रहा है। इस क्षेत्र के सभी मोबाइल नेटवर्क के उपभोक्ताओं का कहना है कि हम लोग अधिक पैसे से रिचार्ज कराते हैं और बात भी नहीं हो पाती है। जो हम लोगों को नेट चलाने के लिए जीबी मिलता है वह भी हम लोग इस्तेमाल नहीं कर पाते हैं। क्योंकि नेटवर्क समस्या की वजह से समस्या ही समस्या है। कुछ लोगों ने बताया कि मोबाइल के जरिए मोबाइल ऑपरेटर से शिकायत कई बार की गई। लेकिन यही कहा जाता है जल्द ही नेटवर्क की समस्या दूर हो जाएगी। लेकिन आज तक नेटवर्क की समस्या जस की तस बनी हुई है।

ब्लेट तार से घायल छुटा गोवंश का कराया इलाज, चारों ओर प्रसंशा हो रही

दैनिक बुद्ध का संदेश गोंडा। किसानों द्वारा फसल बचाने हेतु खेतों में ब्लेट तार से घेराव कर दिया गया है। जिससे वहां चारा देखकर छुटा गोवंश ब्लेट तार को नाघने की कोशिश करते रहते हैं जिससे वह घायल हो जाते हैं। और तड़फ तड़फ कर कुछ दिनों में उनकी जान चली जाती है जिस गांव के पास शव पड़ा होता है उस एरिया में दुर्गंध से लोगों को रहना दु:ख हो जाता है। लेकिन जिला प्रशासन उक्त मामले में किसी प्रकार की कार्यवाही नहीं की जाती है। जिससे लगातार लोग गोवंश को छुटा छोड़ रहे हैं। अवगत कराते चले की एक घायलावस्था में तड़फ रहा एक गोवंश को रास्ते से निकल रहे, रविंद्र गोस्वामी जिला कार्यावाहक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ नंदनी नगर ने देखा तुरन्त वहीं से पशु चिकित्सा अधिकारी वजीरगंज के दूरभाष पर जानकारी दी। और कुछ समय में मेडिकल टीम मौके पर पहुंच गई। और घायल गोवंश का इलाज किया। श्री गोस्वामी के इस नेक कार्य की लोग भूरि भूरि प्रशंसा कर रहे हैं।

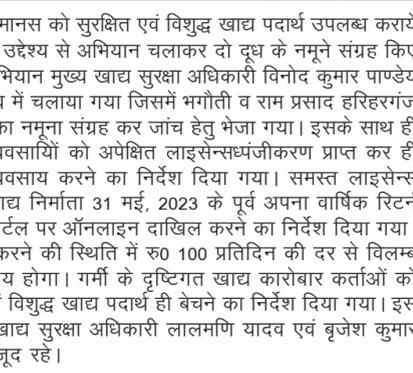


जानलेवा हमला करने व 35 मुकदमों का वांछित लखनऊ से किया गया गिरफ्तार

दैनिक बुद्ध का संदेश गोंडा। पुलिस अधीक्षक गोंडा आकाश तोमर ने अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के तहत वांछित अपराधियों की जल्द से जल्द गिरफ्तारी करने हेतु कड़े निर्देश दिए थे। उक्त के क्रम में थाना कोतवाली देहात पुलिस ने अपर पुलिस अधीक्षक गोंडा शिवराज के पर्यवेक्षण में जानलेवा हमला करने के वांछित अभियुक्त रामकिशुन मिश्रा को मानवाधिकार आयोग के सामने से लोहिया होकर पालिटिकन जाने वाली सड़क किनारे, थाना विभूतिखण्ड जनपद लखनऊ पूर्वी पुलिस कमिश्नरेट लखनऊ से गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार अभियुक्त रामकिशुन मिश्रा पुत्र लालता प्रसाद मिश्रा निवासी खिरौला मोहन थाना कोतवाली देहात जनपद गोंडा के विरुद्ध थाना कोतवाली देहात में पंजीकृत मु०अ०सं०- 516२3, धारा 147, 14, 149, 323, 504, 506, 307 भादवि में काफी दिनों से फरार चल रहा था। अभियुक्त के विरुद्ध न्यायालय द्वारा एन०बी०डब्ल्यू० व धारा 82 सीआरपीसी के आदेश जारी किये गये थे। थाना को० देहात पुलिस द्वारा अभियुक्त के विरुद्ध विधिक कार्यवाही की गयी।

सुरक्षित एवं विशुद्ध खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराये जाने के उद्देश्य से चलाया गया प्रवर्तन अभियान

दैनिक बुद्ध का संदेश बलरामपुर। खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग द्वारा आमजनमानस को सुरक्षित एवं विशुद्ध खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराये जाने के उद्देश्य से अभियान चलाकर दो दूध के नमूने संग्रह किए गये। अभियान मुख्य खाद्य सुरक्षा अधिकारी विनोद कुमार पाण्डेय से नेतृत्व में चलाया गया जिसमें भगौती व राम प्रसाद हरिहरगंज से दूध का नमूना संग्रह कर जांच हेतु भेजा गया। इसके साथ ही खाद्य व्यवसायियों को अपेक्षित लाइसेन्सध्वंजीकरण प्राप्त कर ही खाद्य व्यवसाय करने का निर्देश दिया गया। समस्त लाइसेन्स प्राप्त खाद्य निर्माता 31 मई, 2023 के पूर्व अपना वार्षिक रिटर्न विबवे पोर्टल पर ऑनलाइन दाखिल करने का निर्देश दिया गया। ऐसे न करने की स्थिति में रु० 100 प्रतिदिन की दर से विलम्ब शुल्क देय होगा। गर्मी के दृष्टिगत खाद्य कारोबार कर्ताओं को ताजे एवं विशुद्ध खाद्य पदार्थ ही बेचने का निर्देश दिया गया। इस दौरान खाद्य सुरक्षा अधिकारी लालमणि यादव एवं बृजेश कुमार वर्मा मौजूद रहे।



रोटरी गर्वनर ने दिया पर्यावरण के साथ तालाबों के सौन्दर्यीकरण का सुझाव

रोटरी क्लब बस्ती ग्रेटर अध्यक्ष डा. वी.के. वर्मा ने समीक्षा में दिया कार्यों की जानकारी

दैनिक बुद्ध का संदेश बस्ती। शुक्रवार को रोटरी 3120 के गर्वनर अनिल अग्रवाल ने एक होटल में रोटरी क्लब बस्ती ग्रेटर की समीक्षा बैठक किया। क्लब अध्यक्ष डा. वी.के. वर्मा ने रोटरी गर्वनर को क्लब द्वारा किये गये कार्यों की विस्तार से जानकारी दिया। कहा कि रोटरी के संदेश से लोगों को जोड़ने के साथ ही हर स्तर पर सहयोग किया जा रहा है। डा. वर्मा ने बताया कि क्लब ने दो बच्चों को गोद लेकर उनके शिक्षा का पूरा जिम्मा लिया है। स्कंदान शिविर, निःशुल्क चिकित्सा शिविर, पौध रोपण, जरूरतमंदों में कम्बल का वितरण के साथ ही अनेक कार्यक्रम लगातार किये जा रहे हैं। रोटरी गर्वनर अनिल अग्रवाल ने क्लब के कार्यप्रणाली को सराहा तथा भविष्य में इससे बेहतर कार्य करने के लिए रोटरीयन्स को प्रेरणा दी। कहा कि रोटरी द्वारा



मण्डलाध्यक्ष रोटरीयन आशीष श्रीवास्तव ने रोटरी के गतिविधि और प्रशस्तित पत्र देकर रचनात्मक कार्य करने का सुझाव दिया। समीक्षा बैठक में विकास चौधरी और ओम प्रकाश पाण्डेय को रोटरी की सदस्यता दी गई। रोटरीयन कविता अग्रवाल और रोटरी गर्वनर अनिल अग्रवाल को क्लब द्वारा सम्मानित किया गया। समीक्षा बैठक में क्लब के चार्टर अध्यक्ष किशन कुमार गोयल, प्रतिभा गोयल, राजेश्वरी वर्मा, अशोक कुमार शुक्ला, अनमोल कुमार मोदी, धर्मेन्द्र चौरसिया, राम दयाल चौधरी, डा. आलोक रंजन वर्मा, अभिषेक त्रिपाठी, विनय मोर्य, शिव प्रकाश भारती, कमला देवी शुक्ला, ओम प्रकाश पाण्डेय आदि सदस्यों ने क्लब के गर्वनर को बताया कि क्लब लगातार सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

समर कैम्प में छात्रों ने बनाये मिट्टी के बर्तन, उड़ाए वाटर राकेट

बस्ती। गर्मी की छुट्टियों में किताबी दुनिया से अलग बच्चे कुछ बेहतर सीख समझ सके इस दिशा में ओमनी इण्टर नेशनल स्कूल ने दो दिवसीय समर कैम्प लगाकर नया पहल किया है। शिविर का उद्घाटन करते हुये निदेशक नीता सिंह ने छात्रों का उत्साहवर्धन करते

हुये कहा कि पूरा जीवन सीखने के लिये छोटा है। यह उत्सुकता बनी रहे इस दिशा में छात्रों को मिट्टी के बरतन, खिलौने बनाने के साथ ही वाटर राकेट, हस्तशिल्प प्रशिक्षण के कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं जिससे वे जीवन धारा और उसकी चेतना को सहजता से समझ सकें। मिट्टी के बरतन

बनाने को लेकर जहां बच्चों में विशेष उत्साह दिखा और वे प्रशिक्षण दे रहे कुम्हारों से बारीकियां सीख रहे थे वहीं वाटर राकेट को लेकर उत्साह दिखा। छात्रा अदिति चौधरी, साक्षी चौरसिया, वैष्णवी सिंह, दिव्यांशी गोस्वामी, ऋषभ, सुमित यादव, उत्कर्ष, अखिलेश, आकृति, सजल, सचिन, अभिषेक, रिया, प्रिया, शानिया, अर्पित, शुभम की प्रस्तुतियां शानदार रहीं। कर्मा देवी गुप के सीईओ अंशु सिंह गौतम, यजुवेन्द्र सिंह, प्रधानाचार्य बालाकृष्णन एम, देवेन्द्र कुमार चौधरी, दिनेश सिंह, प्रमोद त्रिपाठी, मोहिता पाण्डेय, प्राची, अंकिता, रेशी कौर ने योगदान दिया।

संचार क्रांति के अग्रदूत पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की पुण्यतिथि पर जिला अध्यक्ष ने की बैठक

दैनिक बुद्ध का संदेश गोंडा। शुक्रवार को कांग्रेस भवन में जनपद के नवागत जिला अध्यक्ष प्रमोद कुमार मिश्रा द्वारा 21 मई को पढ़ने वाली पुण्यतिथि को लेकर कांग्रेस भवन में बैठक की भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री संचार क्रांति के अग्रदूत स्वर्गीय राजीव गांधी जी की पुण्यतिथि को लेकर तैयारी की बैठक की, और समस्त कांग्रेस जनों से कार्यक्रम में आने का आवाहन किया, और अपने विचारों से राजीव जी के कार्यकाल के दौरान किए गए कार्यों की चर्चा की। आम जनता तक पुनः पहुंचाने की अपील करते हुए कहा कि आज हमें नफरत की दुकान को खत्म कर मोहब्बत की दुकान खोलकर देश के तरक्की एवं आम जनों के जरूरतों की चीजों को महंगाई से निजात दिलाने के लिए संकल्पित होने एवं महंगाई को नियंत्रण में रखे जाने की लड़ाई लड़नी होगी। क्योंकि आम आदमी महंगाई की मार झेल रहा है। खुशहाल जिंदगी को नहीं जीने में परत हो कर मजबूरी में जी रहा है। बैठक में मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सहकारिता प्रकोष्ठ के महामंत्री जटाशंकर सिंह, जिला प्रवक्ता शिव कुमार दुबे, महामंत्री बाबा राम सिंगार भारती ब्लॉक अध्यक्ष मनकापुर, शिव बहादुर सिंह, दुर्गा प्रसाद मोर्या, अनिल कुमार दुबे, रमाशंकर सिंह, रहे।

बलरामपुर ऐम्स कॉन्वेंट स्कूल में कला प्रतियोगिता एवं पुरस्कार वितरण



कला प्रतियोगिता का आयोजन कर पुरस्कार वितरण किया गया जोकि कला प्रतियोगिता 19 मई 2023 को ही कराई गई थी जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में राम कुमार मिश्रा एवं विशिष्ट अतिथि अखिलेश्वर प्रसाद तिवारी रहे मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि ने माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया पश्चात विजेता बच्चों को पुरस्कार वितरित किया प्रथम विजेता ओम पाठक, अर्पिता, काजल रहे द्वितीय विजेता प्रियांशी, धनश्याम अर्पित और तीसरे विजेता अर्चना काव्या और अब सीख रहे विद्यालय प्रबंधक श्रवण कुमार शुक्ला व प्रधानाचार्य बी के शुक्ला उप प्रधानाचार्य विदेश्वरी एवं अध्यापिका संगीता श्रीवास्तव, महिमा चौहान, सुनीता सेनी, विशाखा गुप्ता, श्रेया गुप्ता रचना शुक्ला, पीयूष शुक्ला पूर्णिमा सोनी छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

डीएम ने तहसील तुलसीपुर के ग्राम पिपहिवा में वीएचएसएनडी सत्र का किया निरीक्षण

टीकाकरण का लिया जायजा, ज्यू लिस्ट अपडेट किए जाने का दिया निर्देश

दैनिक बुद्ध का संदेश बलरामपुर। डीएम डॉ महेंद्र कुमार द्वारा तहसील तुलसीपुर के ग्राम पिपहिवा में वीएचएसएनडी (ग्राम स्वास्थ्य, स्वच्छता, पोषण दिन) का निरीक्षण कर नियमित टीकाकरण एवं गर्भवती महिलाओं की चाँच का जायजा लिया गया। पिछले सत्र में कितने बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं की चाँच एवं टीकाकरण

हुआ, इसके लिए एएनएम का ज्यू लिस्ट रजिस्टर देखा। रजिस्टर में टीकाकरण से छूटे लोगों का अपडेट नही पाया गया। उन्होंने कहा कि एएनएम एवं आशा एलजिबल एवं छूटे लोगों का डाटा रजिस्टर में अपडेट करते हुए सभी का टीकाकरण सुनिश्चित करें। वीएचएसएनडी सत्र में सीएचओ उपस्थित रहे। इस दौरान उन्होंने सत्र में दवाइयों एवं किट



की उपलब्धता को देखा एवं चेकलिस्ट से मिलान किया। उन्होंने कहा की एएनएम एवं आशा को दवाइयों तथा किट आदि रखने के लिए बड़ा बैग दिए जाए। इस अवसर पर एएपी केशव कुमार, सीएमओ डा सुशील कुमार, एमओआईसी सुमंत, यूनिसेफ की शिखा श्रीवास्तव व अन्य संबंधित अधिकारी धर्मचारीगण उपस्थित रहे।

सदर में तहसील दिवस का आयोजन, 53 प्रार्थना पत्र प्रस्तुत



दैनिक बुद्ध का संदेश सिद्धार्थनगर। शासन के मंशा के अनुरूप प्रत्येक माह के प्रथम एवं तीसरे शनिवार को तहसील दिवस का आयोजन किया जाता है। तहसील दिवस आयोजन के अवसर पर गरीब-असहाय ग्रामीण व्यक्तियों के समस्याओं का त्वरित निस्तारण तहसील दिवस के माध्यम से किया जाता है। तहसील

नौगढ़ में मुख्य विकास अधिकारी जिलाधिकारी जयेंद्र कुमार की अध्यक्षता एवं पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनन्द की उपस्थिति में तहसील समाधान दिवस का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। तहसील नौगढ़ में आयोजित सम्पूर्ण तहसील समाधान दिवस के आयोजन के अवसर पर राजस्व, विकास,

शिक्षा, पूर्ति एवं अन्य विभागों के शिकायतों की मुख्य विकास अधिकारी जिलाधिकारी जयेंद्र कुमार, उपजिलाधिकारी नौगढ़ डा0 ललित कुमार मिश्र द्वारा किया गया तथा पुलिस विभाग से सम्बन्धित प्रार्थना पत्रों की सुनवाई पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनन्द द्वारा किया गया। मुख्य विकास अधिकारी जिलाधि

कारी जयेंद्र कुमार ने सम्पूर्ण तहसील समाधान दिवस नौगढ़ में उपस्थित अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप गरीबों, असहायों को उचित एवं त्वरित न्याय दिलाये जाने की कार्यवाही सुनिश्चित करें। किसी भी पीड़ित व्यक्ति को उचित न्याय दिलाना हम सब की

नैतिक जिम्मेदारी है। किसी भी विभाग का तहसील दिवस का कोई भी प्रकरण लम्बित नहीं होना चाहिए यदि किसी भी विभाग का प्रकरण लम्बित पाया जायेगा तो सम्बन्धित के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जायेगी। सम्पूर्ण तहसील समाधान दिवस के आयोजन के अवसर पर कुल 53 प्रार्थना पत्र प्रस्तुत हुए जिसमें

राजस्व-44, पुलिस विभाग से सम्बन्धित-09, प्रकरण प्रस्तुत हुए। जिसमें राजस्व के 03 प्रार्थना-पत्र को मुख्य विकास अधिकारी जिलाधिकारी जयेंद्र कुमार द्वारा मौके पर ही निस्तारित करा दिया गया। तहसील दिवस में अवशेष शिकायती प्रार्थना पत्रों को तीन दिवस के अन्दर शत-प्रतिशत

निस्तारण की कार्यवाही सम्बन्धित विभाग के अधिकारी सुनिश्चित करने हेतु निर्देशित किया गया। सम्पूर्ण तहसील समाधान दिवस कार्यक्रम के इस अवसर पर उपरोक्त के अतिरिक्त जिला विद्यालय निरीक्षक अवधेश नारायण मोर्य, उप कृषि निदेशक अरविन्द कुमार विश्वकर्मा, जिला कृषि अधिकारी

सी0पी0सिंह, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डा0 एम0पी0सिंह, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी देवेन्द्र कुमार पाण्डेय, जिला पूर्ति अधिकारी बृजेश कुमार मिश्र, तहसीलदार नौगढ़, तहसील नौगढ़ क्षेत्र के अन्तर्गत समस्त थानाध्यक्ष एवं खण्ड विकास अधिकारी तथा अन्य जनपद स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यलय पर जिला कार्यसमिति की बैठक संपन्न

मोदी सरकार के 9 वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 30 मई से 30 जून तक 1 महीने का महासंपर्क अभियान

दैनिक बुद्ध का संदेश सिद्धार्थनगर। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रदेश प्रवक्ता भाजपा डा0 समीर सिंह रहें तथा संचालन जिला उपाध्यक्ष दीपक मोर्य ने किया। मुख्य अतिथि ने बताया मोदी सरकार के 9 वर्ष सफलतापूर्वक पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 30 मई से 30 जून तक 1 महीने का महासंपर्क अभियान पार्टी द्वारा चलाया जाएगा जिसमें प्रेस वार्ता के माध्यम से सरकार की उपलब्धियों को आम जनमानस को बताया जाएगा लोकसभा स्तर पर पार्टी जनसभा करेगी महा संपर्क अभियान के तहत घर-घर कार्यकर्ताओं के माध्यम से संपर्क करेगी भाजपा जिला संयोजक पासवान ने कहा मंडल स्तर तक कार्य समिति की बैठक करेगी भाजपा उक्त अवसर पर सांसद डुमरियागंज जगदीशका पाल, विधायक बांसी राजा जय प्रताप सिंह, पूर्व मंत्री डा0 सतीश



दिवेदी, पूर्व विधायक राघवेंद्र सिंह, जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि उषेंद्र सिंह, निवर्तमान जिलाध्यक्ष निर्वाचित नगर पालिका अध्यक्ष गोविंद माधव, पूर्व जिलाध्यक्ष बृजबिहारी मिश्र, रामकुमार कुंवर, लाल की त्रिपाठी, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य साधन चौधरी, क्षेत्रीय अध्यक्ष पिछड़ा मोर्चा शिवनाथ चौधरी, जिला उपाध्यक्ष घनश्याम मिश्रा, तेजू विश्वकर्मा, राम कृपाल चौधरी, जिला महामंत्री विजय कांत चतुर्वेदी, विपिन सिंह, जिला मंत्री अजय उपाध्याय, फतेहबादुर सिंह, नगर अध्यक्ष अर्चिमान मिश्र, युवा मोर्चा मनोज मोर्या, गौरव मिश्र, विकास पाण्डेय, अविनाश सिंह, मीडिया प्रभारी आशीष शुक्ला, निशांत पाण्डेय, नवनिर्वाचित नगर पंचायत अध्यक्षगण, मंडल अध्यक्षगण, मंडल प्रभारीगण, ब्लॉक प्रमुखगण एवं भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता बंधु उपस्थित रहे।

45 वर्षीय महिला की डंडे से मारकर हत्या, क्षेत्र में सनसनी



रवि जयसवाल / दैनिक बुद्ध का संदेश सिद्धार्थनगर। जोगिया थाना अंतर्गत गोनहा गांव में शनिवार रात को आपसी विवाद के चलते 45 वर्षीय महिला की डंडे से मारकर हत्या कर दी गई सभी हत्या आरोपी फरार हो गए। आपको बता दें कि जिला मुख्यालय के नजदीक के थाने जोगिया के गोनहा गांव में शनिवार रात उस समय हंगामा मच गया और पूरा जिला प्रशासन उस गांव को छावनी बना लिया जब एक 45 वर्षीय महिला की डंडे से मारकर हत्या कर दी गई साथ ही एक लड़की भी गंभीर रूप से घायल जिला हॉस्पिटल में भर्ती हो गई मामला आपसी विवाद का बताया जा रहा है लोगों का कहना है कि कटहल तोड़ने को लेकर आपसी विवाद हुआ था जिसमें महिला के सर पर किसी मोटे डंडे से मार कर हत्या कर दी गई साथ ही उसकी लड़की को भी जान से मारने का प्रयास किया गया हत्या करने के बाद हत्यारे गांव छोड़कर फरार हो गए। पुलिस के मुताबिक हत्या में तउलन, बरसाती, किसलावती, गोलकी, दिनेश, चेताराम आदि ने मिलकर हत्या की है हत्या में मारी गई महिला बासमती पत्नी



जल्द होगी गिरफ्तारी-एसपी अमित कुमार आनंद

दैनिक बुद्ध का संदेश घटनास्थल पर पहुंचते ही तेजतर्रार पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनंद ने कहा कि छानबीन की जा रही है हत्या में जो भी लोग शामिल हैं उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी पुलिस की टीम को हत्यारों के पीछे लगा दी गई है जल्दी ही सारी गिरफ्तारियां हो जाएगी पुलिस लोगों की सुरक्षा के लिए मिली हुई है और लोगों की सुरक्षा की जाएगी।

राजू और लगभग 45 वर्ष है हत्या पुलिस के लिए चुनौती है जिसकी सूचना मिलते ही जिला प्रशासन पूरी फौज के साथ गांव में पहुंचकर छानबीन करने लगा कि संरेआम की गई इस हत्या के आरोपियों को शीघ्र गिरफ्तार कर लोगों में सुरक्षा का माहौल बनाएं।

जलकर खाक हुई कार दे रही, दुर्घटना को दावत

दैनिक बुद्ध का संदेश



पड़ी है शासन-प्रशासन दोनों ही मौन जिससे कभी भी कोई न कोई बड़ा हादसा हो सकता है।

सिद्धार्थनगर। दुर्घटना में जलकर खाक हुई कार नैशनल हाइवे के तीखे मोड़ पर नए दुर्घटना को दावत दे रही है आपको बता दें कि आज पिछले कई दिनों से बिल्डिंग और बरगदवा के बीच में यह कार जलकर खाक हो चुकी है जो बीच रास्ते में 1 हफ्ते से

चेयरमैन प्रतिनिधि ने मन्दिर के घण्टे का किया उद्घाटन



दैनिक बुद्ध का संदेश शोहरतगढ़, सिद्धार्थनगर। स्थानीय श्रीरामजानकी मंदिर में नगर के श्रीराम पटवा जी द्वारा भेंट स्वरूप लगाए गए 22 किलो के घंटे का भी उद्घाटन पूजन अर्चन के साथ व्यापार मंडल संरक्षक एवं चेयरमैन प्रतिनिधि रवि अग्रवाल ने किया। इस दौरान प्रसाद वितरण का भी कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस दौरान श्रीराम जानकी मंदिर व्यवस्थापक रामसेवक गुप्ता सहित सतीश मित्तल, जय प्रकाश वर्मा, रिकू वर्मा, किशोरी लाल गुप्ता, महावीर वर्मा, गोविंद प्रसाद फौजी, धर्मेन्द्र अग्रहरी, व्यापार मण्डल अध्यक्ष शैलेन्द्र कौशल, मनोज गुप्ता, महेश कसौदन, कौशल किशोर उमर, राजेंद्र कुमार कान्दू समेत परिजन पंकज कुमार श्रीवास्तव, इंजीनियर पुनीत कुमार श्रीवास्तव, इंजीनियर प्रफुल्ल कुमार श्रीवास्तव आदि मौजूद रहे।

एसएसबी ने इक्कीस बोरी डीएपी खाद किया सीज

दैनिक बुद्ध का संदेश



के सीमा चौकी बजहा एवं पकड़ीहवा के जवानों ने शुक्रवार को गस्ती के दौरान सीमा क्षेत्र के कोइरीडीहा गांव के पास से अवैध 1 तरीके से जमा किये गए 21 बोरी डीएपी खाद को जब्त किया। बजहा कैंप निरीक्षक अखिलेश कुमार के नेतृत्व में जवान गस्त पर रहे, सूचना के आधार पर खाद लावारिस एक झोपड़ी में रखी मिली जिसे कब्जे में लेकर कैंप लाया गया। लोगों से पूछताछ किया, कोई जिम्मेवार नहीं दिखा। विधिक कार्य वाही करते हुए खाद को खुनवा कस्टम के लिए भेज दिया गया। सीजर में उप निरीक्षक गौर गोपाल अधिकारी, मुख्य आरक्षी प्रोशंता कुमार दास, आरक्षी राहुल यादव, उप निरीक्षक कश्मीर सिंह, एम. पंडित कुमार सिंह, सुनील कुमार सिंह विनोद कुमार शामिल रहे।

गोपेश्वर बने प्रधानाचार्य परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष

दैनिक बुद्ध का संदेश

उसका बाजार, सिद्धार्थनगर। कस्बा के किसान इंटर कालेज उसका बाजार के प्रधानाचार्य गोपेश्वर चौबे को उप प्रधानाचार्य परिषद इकाई सिद्धार्थ नगर का सर्व सम्मति से कार्यकारी अध्यक्ष बनाया गया है। जनपद के तिलक इंटर कालेज बासी में शुक्रवार को सम्पन्न हुए सम्मान समारोह व नई कार्यकारिणी के गठन में परिषद के प्रदेश संरक्षक श्रीनिवास शुक्ल द्वारा गोपेश्वर चौबे को कार्यकारी जिलाध्यक्ष मनोनीत किया गया है। इनके कार्यकारी जिलाध्यक्ष बनने पर चंद्रभान त्रिपाठी, संजय गुप्ता, वीरेंद्र पाण्डेय, अशोक पाण्डेय, राम पूजन, धर्मेन्द्र पाण्डेय, प्रमोद पाण्डेय, राम दरस यादव, अनिल मिश्र, सर्वेश उपाध्याय, सतेंद्र मिश्र, अम्बरीष मिश्र, अनिल चौबे आदि ने खुशी व्यक्त की है।



सम्पादकीय

जरूरत उन महिलाओं पर ध्यान देने की है, जो घर की चाहरदीवारी में बंद नहीं रहना चाहतीं और बाहर काम करने के मौके की तलाश में रहती हैं। साथ ही उन महिलाओं को उचित विकल्प उपलब्ध कराना होगा, जो नौकरी जाने के बाद दोबारा काम पर लौटना चाहती हैं। लेकिन यह सब एक नियोजित और ऐसी अर्थव्यवस्था में ही हो ...

2021 में कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी घटकर 23 फीसदी रह गई। 2018 में हुए एक सर्वेक्षण से सामने आया था कि कार्यबल में महिलाओं की हिस्सेदारी के मामले में 131 देशों की सूची में भारत 120वें नंबर पर था। हाल के दशकों में, भारत में कामकाजी महिलाओं की संख्या में काफी कमी आई है। विश्व बैंक के मुताबिक भारत में औपचारिक और अनौपचारिक कार्यबल में महिलाओं की हिस्सेदारी साल 2005 में 27 फीसदी थी, जो 2021 में घटकर 23 फीसदी रह गई। 2018 में हुए थॉमसन रॉयटर्स फाउंडेशन के सर्वेक्षण के मुताबिक कार्यबल (वर्क फोर्स) में महिलाओं की हिस्सेदारी के मामले में 131 देशों की सूची में भारत का 120वां स्थान था। स्पष्टतः भारत में कार्यक्षेत्र में महिलाओं की कमी के पीछे कई कारण हैं। इनमें बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी, शादी के बाद घर की देखभाल, कौशल की कमी, शैक्षणिक व्यवधान और नौकरियों की कमी शामिल हैं। महिलाओं को घर के बाहर जाकर काम नहीं करना चाहिए, जैसी मान्यताएं भी इसके लिए जिम्मेदार हैं। थॉमसन रॉयटर्स फाउंडेशन के सर्वेक्षण की रिपोर्ट में कहा गया था कि भारत महिलाओं के लिए सबसे खतरनाक

कार्यबल में घटती महिलाएं



समझती हो। दुर्भाग्य से भारत में अभी सोच ठीक इसके उलटी दिशा में है।

देशों में से एक है— खासकर यौन हिंसा के जोखिम के मामले में। कार्यबल में महिलाओं की घटी संख्या पर अक्सर चिंता जताई जाती है, लेकिन इसका व्यावहारिक समाधान क्या है, इस पर कम ही बात होती है। इस समस्या का संबंध सामाजिक मान्यताओं के साथ—साथ अर्थव्यवस्था और उसके संकट से भी जुड़ा है। जब किसी कंपनी में श्रमिकों को निकालने की नौबत आती है, तो सबसे पहले महिलाओं को बाहर किया जाता है। चूंकि महिलाओं को लैंगिक असमानता और पितृसत्तात्मक समाज के दोहरे भेदभाव का सामना करना पड़ता है, और अब सरकार ने भी महिलाओं के कार्यस्थलों पर अनुकूल स्थितियां बनाने से ध्यान हटा लिया है, इसलिए यह समस्या गहराती जा रही है। जरूरत उन महिलाओं पर ध्यान देने की है, जो घर की चाहरदीवारी में बंद नहीं रहना चाहतीं और बाहर काम करने के मौके की तलाश में रहती हैं। साथ ही उन महिलाओं को उचित विकल्प उपलब्ध कराना होगा, जो नौकरी जाने के बाद दोबारा काम पर लौटना चाहती हैं। लेकिन यह सब एक नियोजित और ऐसी अर्थव्यवस्था में ही हो सकता है, जहां नीतियां बनाने में सरकार अपनी भूमिका

ये जो सूरत—ए—हाल है!

जब ऐसी साधारण चीजों का बाजार सिकुड़ा है, तो निर्यात होने वाली वस्तुओं के लिए देश के अंदर उपभोक्ता ढूंढना नामुमकिन ही है। आयात का गिरना इस बाजार रुझान का भी एक संकेत है। निर्यात और आयात दोनों में अप्रैल में भारी गिरावट आई। निर्यात में 12 प्रतिशत और आयात में 14 प्रतिशत गिरावट आई। इसका ऊपर से दिखने वाला सकारात्मक नतीजा यह है कि देश का व्यापार घाटा कम हो गया। लेकिन यह गौर करने की बात है कि आयात में गिरावट को सिर्फ दो स्थितियों में अच्छी खबर माना जाता है। पहली तो यह कि उत्पादन सामग्रियों देश के अंदर ही बन रही हों और इनका इस्तेमाल निर्यात के लिए उत्पादन में हो रहा हो। दूसरी यह कि देश के अंदर बाजार बढ़ रहा हो और उसकी मांग को पूरा करने लायक उत्पादन करने में देश आत्म-निर्भर हो गया हो। ये आदर्श स्थितियां होती हैं। लेकिन भारत के साथ यह सूरत नहीं है। यहां आयात गिरने का सीधा अर्थ देश के अंदर उत्पादक गतिविधियों में गिरावट के कारण मांग का घटना है। जाहिर है, निर्यात के लिए विदेशों में प्रतिकूल बनते हालात के कारण निर्यात की स्थितियां बिगड़ रही हैं, तो देश के अंदर उत्पादक गतिविधियां भी धीमी हो रही हैं। इस बात की तस्वीर दूसरे आंकड़े भी करते हैं। मसलन, यह खबर महत्वपूर्ण है कि एफएमसीजी (तेल—साबुन जैसी रोजमर्रा के उपभोग की चीजें बनाने वाली कंपनियों) अब अपने मुनाफे की कीमत पर सामग्रियों के दाम घटाने का फैसला किया है। साथ ही उन्होंने उन चीजों के वजन बढ़ाने का फैसला किया है, जिनकी कीमत पहले जितनी रखने के लिए उनकी मात्रा में कटौती कर दी थी। इसका साफ तौर पर अपने गायब होते उस बाजार को वापस पाने की कोशिश है, जो महंगाई के कारण कंपनियों ने गंवा दिया है। एक वित्तीय अखबार ने यह खबर छापी है कि हेडलाइन मुद्रास्फूर्ति में गिरावट के बावजूद अप्रैल में उपभोक्ता समग्रियों की महंगाई बनी रही। ऐसे में उपभोक्ताओं का बजट में कटौती करने का ट्रेंड जारी रहना स्वाभाविक है। जाहिर है, जब ऐसी साधारण चीजों का बाजार सिकुड़ा है, तो निर्यात होने वाली वस्तुओं के लिए देश के अंदर उपभोक्ता ढूंढना नामुमकिन ही है। आयात का गिरना इस बाजार रुझान का भी एक संकेत है। भारत की आर्थिक संभावनाओं के मचे शोर से बीच ये हकीकत गुब्बारे में छेद करने वाली पिन की तरह है।

अमिताभ बच्चन की सफाई

हमारे देश के ही गांधीजी थे, जिन्होंने द.अफ्रीका में नस्लभेद के खिलाफ आवाज उठाई थी और आगे चलकर जब जर्मनी के तानाशाह हिटलर ने गांधीजी से मिलना चाहा, तो उन्होंने इंकार कर दिया। क्योंकि हिटलर ने नस्ल और वर्ण की श्रुता के नाम पर अमानवीय अत्याचार की आग में जर्मनी को झोंका था। अगर भारत में धार्मिक स्वतंत्रता के संविधानप्रदत्त अधिकार के बावजूद अल्पसंख्यकों को किसी ...

बॉलीवुड में शहंशाह और महानायक जैसे नामों से चर्चित अमिताभ बच्चन की पिछले दिनों एक इंस्टाग्राम पोस्ट आई, जिसमें वे पीले रंग की टी शर्ट, शॉर्ट्स और कैप पहने बाइक सवार के पीछे बैठे दिख रहे हैं। इस तस्वीर के साथ महानायक बच्चन ने कैंशन दिया कि रशवारी के लिए धन्यवाद दोस्त.. आपको नहीं जानता.. लेकिन आपने एहसान किया और मुझे काम की जगह पर समय पर पहुंचा दिया... तेजी से और न सुलझने वाले ट्रैफिक जाम से बचने के लिए... धन्यवाद कैप्ट, शॉर्ट्स और पीले रंग की टी—शर्ट वाले। सोशल मीडिया पर अमिताभ बच्चन के लाखों फॉलोअर्स हैं।

लिहाजा इस पोस्ट को डेरों लाइक्स मिले। तेज खबर पहुंचाने वाले चौनलों ने फटाफट खबर भी बना दी कि मुंबई के ट्रैफिक से बचने के लिए अमिताभ ने लिया बाइक सवार का सहारा। वक्त के पाबंद अमिताभ शूटिंग पर समय से पहुंचने के लिए बाइक पर हुए सवार। अनजान शख्स से अमिताभ ने ली लिफ्ट और शूटिंग पर पहुंचे, आदि। उनके प्रशंसकों ने भी इस पोस्ट पर कई तरह की प्रतिक्रियाएं दीं, बिना यह सोचे—समझे कि अमिताभ बच्चन तक यह तस्वीर कैसे पहुंची। उन्होंने तस्वीर भेजने वाले का नाम क्यों नहीं लिखा।

इस तस्वीर को किसी ने तो खींचा ही होगा, लेकिन किसने ये खुलासा तो होना चाहिए था, क्या अमिताभ बच्चन को ये

तस्वीर खींचने वाले ने भेजी थी या किसी और ने। ये सारे सवाल अमिताभ बच्चन की काम और वक्त की प्रतिबद्धता की तापीयों में गुम हो गए। सोशल मीडिया पर अक्सर यही होता है। लोग किसी भी अजीबोगरीब तस्वीर या पोस्ट के फेर में आ जाते हैं और सहज बुद्धि वाले सवाल दरकिनार हो जाते हैं। कौवा कान ले गया जैसे मुहावरे जब बने होंगे, तब सोशल मीडिया और फेक न्यूज तो नहीं थे, लेकिन इंसान की फितरत आदिम युग से आज के डिजिटल युग तक एक जैसी ही है।

बहरहाल, अमिताभ बच्चन की इस तस्वीर में एक पेंच निकल गया कि उन्होंने बाइक के पीछे बैठकर हेलमेट नहीं पहना। जबकि कानून के अनुसार हेलमेट न पहनने पर चालान कट सकता है।

हेलमेट न पहनने के कारण सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतें समाज और सरकार के लिए बड़ी चिंता का विषय है। केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्रालय की एक रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले साल दुर्घटनाओं में मारे गए कुल 69,385 दोपहिया सवारों में से लगभग 47,000 लोगों ने हेलमेट नहीं पहना था। इन आंकड़ों में और बढ़ोतरी न हो, इसलिए सरकार ने अब नियम काफी सख्त कर दिए हैं। ऐसे में समाज के चर्चित लोगों से यह उम्मीद की जाती है कि वे बाकियों के लिए मिसाल बनें। हर नियम का पालन करें। इससे पहले अनुष्का शर्मा

का सोमवार को एक वीडियो इंटरनेट पर वायरल हुआ था, जिसमें अभिनेत्री को अपनी डबिंग के लिए जाना था, लेकिन पेड़ टूटने की वजह से उनका रास्ता बंद हो गया था। इस वजह से अनुष्का शर्मा ने अपने बॉडीगार्ड की मदद ली और बाइक पर उनके साथ निकलीं। इस वीडियो में अनुष्का और उनका बॉडीगार्ड दोनों बिना हेलमेट के दिखे।

मुंबई की ट्रैफिक पुलिस ने अमिताभ बच्चन और अनुष्का शर्मा दोनों के खिलाफ हेलमेट न पहनने के लिए कड़े कदम उठाए और उन पर 10, 500 का जुर्माना लगाया। इसके साथ ही, ट्रैफिक पुलिस ने धारा 129ध49, धारा 5ध180 और धारा 3(1)181 के तहत उन पर चालान जारी किया है। पुलिस ने चालान की फोटो ट्विटर पर शेयर भी की। ट्रैफिक पुलिस ने ये बताया है कि राइडर्स ने जुर्माना भरा है।

लेकिन कहानी यहां खत्म नहीं हुई। अब अमिताभ बच्चन ने इस मामले में यू टर्न लिया है। अपने ब्लॉग में उन्होंने लिखा—शरिवार है... बलाई एस्टेट की एक गली में शूटिंग के लिए औपचारिक अनुमति ली गई थी... रविवार के लिए अनुमति मांगी गई थी क्योंकि सभी कार्यालय बंद हैं और कोई आम लोग या यातायात नहीं है। शूटिंग के लिए पुलिस की अनुमति से इलाके की एक गली बंद है... गली मुश्किल से 30—40 मीटर है। मैंने जो ड्रेस पहनी है, वह फिल्म के लिए मेरी कॉस्ट्यूम है। और... मैं चालक

दल के सदस्य के रूप में बाइक पर बैठकर मटरगश्ती कर रहा हूँ... यहां कहीं नहीं जा रहा हूँ, लेकिन यह आभास दे रहा हूँ कि मैंने समय बचाने के लिए यात्रा की है...३।

अमिताभ बच्चन बड़े कवि हरिवंशराय बच्चन के सुपुत्र हैं, उन्होंने बड़े सलीके से आभास शब्द का इस्तेमाल किया है। असल में यहां झांसा शब्द लिखा जाना चाहिए था। क्योंकि वे मटरगश्ती कर रहे थे और लोग इस झांसे में आ गए कि वे वक्त के कितने पाबंद हैं, कि वे सुपरस्टार होने के बावजूद शूटिंग पर समय से पहुंचने के लिए बाइक पर बैठ गए, वो भी एक अनजान शख्स के साथ। किशोरवय के लोग इस तरह के मजाक अपने साथियों के साथ करें, यह तो समझ आता है। मगर अमिताभ बच्चन को ऐसा करने की जरूरत क्यों पड़ी, ये समझना कठिन है। क्या वे अब भी किसी तरह प्रचार पाना चाहते हैं। वैसे उनकी लोकप्रियता का आलम तो ये है कि वो जहां खड़े हो जाएं, स्टारडम वहीं से शुरू होता है।

फिल्म ही नहीं, टीवी के पर्दे पर भी वे अपनी अलग छाप छोड़ चुके हैं। दर्जनों विज्ञापन उनकी झोली में हैं। उम्र के लिए बसंत देखने के बावजूद वे पूरी सक्रियता से मनोरंजन जगत में बने हुए हैं, यह बात ही प्रेरणादायक है। नौजवानों को उनकी फूर्ती और मेहनत देखकर सीख मिलती है। अमिताभ बच्चन चाहें तो अपने प्रभाव का इस्तेमाल समाज की बेहतरी के लिए करें।

कर्नाटक में कांग्रेस को इस राजनीति का फायदा हुआ और आगे आने वाले चुनावों में भी कांग्रेस को इसका फायदा हो सकता है। कई राज्यों में प्रादेशिक क्षत्रपों की बेचौनी इसी वजह से बढ़ी है। सो, ईमानदार और साफ—सुथरी छवि, अलग अलग जातीय समूहों में व्यापक जनाधार और धर्मनिरपेक्ष राजनीति ये तीन चीजें ऐसी हैं, जो सिद्धरमैया के पक्ष में गईं और वे शिवकुमार को पीछे छोड़ कर फिर मुख्यमंत्री ...

अजीत द्विवेदी, आखिरकार कांग्रेस ने तय किया कि सिद्धरमैया कर्नाटक के मुख्यमंत्री होंगे। वे दूसरी बार मुख्यमंत्री बनेंगे। कांग्रेस में शामिल होने के छह साल बाद ही 2013 में ने कर्नाटक के मुख्यमंत्री बने थे और उसके बाद से प्रदेश में कांग्रेस की राजनीति की एक महत्वपूर्ण धुरी बने हुए हैं। वे सरकार के बारे में अच्छी धारणा बनवाने में कामयाब होंगे और अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के बहुत काम आएंगे। अभी कांग्रेस की पहली जरूरत यह थी कि चुनाव प्रचार के दौरान लोगों के मन में उसने जो धारणा बनवाई है वह और मजबूत हो। ६ यान रहे कि कांग्रेस की कर्नाटक जीत में जो मुख्य फेक्टर रहे हैं उनमें से ज्यादातर का प्रतिनिधित्व सिद्धरमैया करते हैं। भाजपा की तत्कालीन सरकार पर भ्रष्टाचार के आरोपों के कंट्रास्ट में सिद्धरमैया ईमानदार चेहरा हैं। सांप्रदायिक छरवीकरण कराने वाले एजेंडे के कंट्रास्ट में सिद्धरमैया एक मजबूत सेकुलर नेता हैं। और अंत में लिंगायत व वोककालिगा के बीच बंटी राज्य की

राजनीति में सबसे बड़े जातीय समूह के सर्वमान्य नेता हैं।

ध्यान रहे कांग्रेस ने कर्नाटक विधानसभा चुनाव मुख्य रूप से भ्रष्टाचार के मुद्दे पर लड़ा था और लोगों के मन में यह धारणा बनवाई थी कि प्रदेश की तत्कालीन भाजपा सरकार 40 फीसदी कमीशन वाली सरकार है। उसके कंट्रास्ट में कांग्रेस सरकार साफ—सुथरी है यह धारणा डीके शिवकुमार के चेहरे से नहीं बन सकती थी। यह धारणा सिद्धरमैया के चेहरे से बनेगी और मजबूत होगी। सिद्धरमैया की छवि एक सख्त प्रशासक और ईमानदार मुख्यमंत्री की रही है। 2013 से 2018 के उनके पांच साल के कार्यकाल में लगे छोटे मोटे आरोपों को छोड़ दें तो उनकी छवि बेदाग रही। उन्होंने रज्यों की त्यों धर दीन्ही चदरियाघ के अंदाज में राजनीति की। उसके बाद एक साल के लिए कांग्रेस समर्थित जेडीएस की सरकार थी और चार साल भाजपा की सरकार रही, जिसमें बीएस येदियुरप्पा और बसवराज बोम्मई, दो मुख्यमंत्री बने। पांच साल में बने इन तीनों मुख्यमंत्रियों की सरकार का

कामकाज विवादों में रहा। सो, सिद्धरमैया के चेहरे से कांग्रेस ईमानदार सरकार देने का अपना दावा मजबूत कर सकती है।

सिद्धरमैया कुरुबा जाति से आते हैं, जो अन्य पिछड़ी जाति यानी ओबीसी समूह की एक मजबूत जाति है। राज्य में कुल ओबीसी आबादी 36 फीसदी है और राज्य में कुरुबा आबादी सात फीसदी है, जो 17 फीसदी लिंगायत और 11 फीसदी वोककालिगा के बाद संभवतः सबसे बड़ी जाति है। सिद्धरमैया प्रदेश की राजनीति में निर्विवाद रूप से सबसे बड़े ओबीसी नेता हैं और उनकी वजह से यह समूह कांग्रेस के साथ जुड़ा है। यह जुड़ाव 2013, 2018 और 2023 के तीनों चुनावों में दिखा है। तीनों चुनावों में कांग्रेस का वोट क्रमशः बढ़ता गया है। 2013 में कांग्रेस 36 फीसदी वोट लेकर जीती थी और सिद्धरमैया मुख्यमंत्री बने थे। पांच साल सरकार चलाने के बाद 2018 में तीनों जातियों का वोट कांग्रेस को मिले, जो 36 फीसदी वोट लेकर 38 फीसदी हो गया था। यह अरसे बाद पहला मौका था, जब किसी इन्कम्बेंट यानी सत्तारूढ़ दल का वोट बढ़ा

कांग्रेस के काम आएंगे सिद्धरमैया

हो। कांग्रेस हार गई थी लेकिन उसका वोट प्रतिशत बढ़ा था। उसके बाद 2023 में कांग्रेस का वोट बढ़ कर 43 फीसदी हो गया। इन तीनों चुनावों में कांग्रेस को मिले वोट का एक निष्कर्ष यह है कि ओबीसी वोट कांग्रेस के साथ जुड़ा रहा है और सिद्धरमैया के मुख्यमंत्री बनने से उसका जुड़ाव मजबूत होगा। इस निष्कर्ष पर पहुंचने का एक कारण यह भी है कि भाजपा शुरू से लिंगायत वोट की राजनीति करती है और जेडीएस बुनियादी रूप से वोककालिगा समुदाय की पार्टी है।

असल में कर्नाटक में पिछड़घ समुदाय से आने वाले सबसे पहले बड़े नेता देवराज अर्स ने शहिदाघ शब्द दिया था, जिसके सहारे अल्पसंख्यक, पिछड़ा और दलित की साझा राजनीति को प्रतीकित किया जाता है। कांग्रेस के दिग्गज रहे आरएल जलप्पा ने इस राजनीति को आगे बढ़ाया था और अब सिद्धरमैया इस राजनीति का प्रतिनिधि त्व करते हैं। कर्नाटक की राजनीति में उनका कद इस शहिदाघ समीकरण से बढ़ा है। वे खुद पिछड़ी जाति से आते हैं लेकिन अल्पसंख्यक और दलित उनके ऊपर समान रूप से भरोसा करते हैं। यह उनकी सबसे बड़ी राजनीतिक ताकत है। इसी वजह से मुख्यमंत्री की रस में डीके शिवकुमार उनसे पिछड़े। सो, वोट की राजनीति के लिहाज से भी सिद्धरमैया का चयन कांग्रेस के लिए बहुत काम आने वाला साबित होगा।

तीसरी बात धर्मनिरपेक्ष राजनीति की है, जिसका सबसे विश्वसनीय चेहरा सिद्धरमैया का है। वे इस समय कर्नाटक की राजनीति में शहिदाघ समीकरण के प्रतिनिधि हैं।

चुनाव के दौरान एक तरफ भारतीय जनता पार्टी लगातार सांप्रदायिक छरवीकरण कराने वाले मुद्दे उठा रही थी तो दूसरी ओर कांग्रेस ने आगे बढ़ कर एलान कर दिया कि सत्ता में आई तो नफरत फैलाने वाले संगठनों, चाहे वह पीएफआई हो या बजरंग दल, उन पर पाबंदी लगाएगी। बजरंग दल पर पाबंदी की घोषणा ने अल्पसंख्यक समुदाय के बीच कांग्रेस का भरोसा बढ़ाया। पहले भी सिद्धरमैया अपने पांच साल के शासन के दौरान तमाम तरह के मठों, मंदिरों, मस्जिदों आदि से दूर रहे। उन्होंने राज्य के धर्मनिरपेक्ष होने की धारणा को मजबूत किया। इस बार भी चुनाव नतीजे आने के बाद डीके शिवकुमार सबसे पहले तुमकूर में लिंगायत समुदाय के सिद्धरमैया मठ में पहुंचे और आशीर्वाद लिया। उनको मुख्यमंत्री बनाने के लिए कई धर्मगुरुओं ने अपील की थी। इसके उलट सिद्धरमैया किसी मंदिर या मठ में नहीं गए। उनके लिए पिछड़े, दलित और अल्पसंख्यक समूहों का दबाव था।

गौरतलब है कि राहुल गांधी जब भारत जोड़ो यात्रा कर रहे थे तो उन्होंने धर्मनिरपेक्ष राजनीति पर जोर दिया था। भारत की राजनीति में पिछले कुछ समय से धर्मनिरपेक्षता की बात करना

आत्मघाती माना जाने लगा है क्योंकि सोशल मीडिया में ऐसे लोगों को टुकड़े टुकड़े गैंग या देश विरोधी बताया जाने लगा है। इसके बावजूद राहुल गांधी ने जोखिम लिया और धर्मनिरपेक्ष राजनीति की डोर पकड़े रहे। कर्नाटक में कांग्रेस को इस राजनीति का फायदा हुआ और आगे आने वाले चुनावों में भी कांग्रेस को इसका फायदा हो सकता है। कई राज्यों में प्रादेशिक क्षत्रपों की बेचौनी इसी वजह से बढ़ी है। सो, ईमानदार और साफ—सुथरी छवि, अलग अलग जातीय समूहों में व्यापक जनाधार और धर्मनिरपेक्ष राजनीति ये तीन चीजें ऐसी हैं, जो सिद्धरमैया के पक्ष में गईं और वे शिवकुमार को पीछे छोड़ कर फिर मुख्यमंत्री बने। ये तीनों चीजें आगे की राजनीति में कांग्रेस के बहुत काम आ सकती हैं।



आईपीएल 2023 में इन टीमों के पास अब भी है प्लेऑफ में पहुंचने का मौका, दो दिन और चार मैचों के बाद सामने आएगा रिजल्ट

इंडियन प्रीमियर लीग 2023 में लगातार रोमांचक मुकाबले देखने को मिल रहे हैं। अब लीग मुकाबले अपने अंतिम दौर में पहुंच चुके हैं। आईपीएल 2023 में प्लेऑफ की रेस बेहद रोमांचक हो गई है। लीग में अब तक कुल 66 मैच खेले जा चुके हैं, मगर प्ले ऑफ के लिए सिर्फ एक ही टीम ने क्वालीफाई किया है। अन्य तीन टीमों का नाम अब तक प्लेऑफ के लिए फाइनल नहीं हो सका है।

प्लेऑफ की रेस से पंजाब किंग्स पूरी तरह से बाहर हो गई है। राजस्थान रॉयल्स की टीम ने पंजाब किंग्स को अंतिम लीग मुकाबले में चार विकेट से हराया और प्लेऑफ में पहुंचने की अपनी उम्मीदों को बरकरार रखा है। हार के बाद प्लेऑफ में पहुंचने की पंजाब किंग्स की सभी उम्मीदें खत्म हो गई हैं। इस जीत के साथ राजस्थान 14 अंकों के साथ 5वें स्थान पर है। वहीं रॉयल चैलेंजर्स बेंगलूर भी चौथे पायदान पर पहुंच चुकी है। जबकि मुंबई इंडियंस भी 14 अंकों के साथ छठे पायदान पर है। यानी कुल

तीन टीमों के 14 अंक हैं।

और कोलकाता नाइट राइडर्स का अंतिम मुकाबला 20 मई को



गौरतलब है कि अब तक प्लेऑफ के लिए सिर्फ गुजरात टाइटंस की टीम ने ही क्वालीफाई किया है। वहीं तीन अन्य टीमों की जगह अभी खाली है और इन स्थानों के लिए 6 टीमों के बीच रेस देखने को मिलेगी। इन 6 टीमों में चेन्नई सुपर किंग्स, लखनऊ सुपर जायंट्स, रॉयल चैलेंजर्स बेंगलूर, राजस्थान रॉयल्स, मुंबई इंडियंस

का नाम शामिल है। वहीं दिल्ली कैपिटल्स, सनराइजर्स हैदराबाद और पंजाब किंग्स का सफर लीग में खत्म हो चुका है। आंकड़ों के मुताबिक अगर चेन्नई सुपर किंग्स और लखनऊ सुपर जायंट्स दोनों ही अपने अंतिम मुकाबलों में जीत हासिल करती हैं तो वो सीधे प्लेऑफ के लिए क्वालीफाई कर जाएंगी। बता दें कि चेन्नई सुपर किंग्स

दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ होगा जबकि लखनऊ सुपर जायंट्स का मुकाबला कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ होगा। हालांकि अगर चेन्नई सुपर किंग्स ये मुकाबला हार जाती है तो उसके लिए प्लेऑफ में पहुंचना मुंबई इंडियंस और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलूर के प्रदर्शन पर निर्भर करेगा।

बेंगलूर और मुंबई पर निगाहें

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलूर ने सनराइजर्स हैदराबाद को पिछले मुकाबले में हराया था, जिसके बाद वो चौथे नंबर पर है और प्लेऑफ में खेलने की उम्मीदें भी बरकरार हैं। आरसीबी का अंतिम मुकाबला गुजरात टाइटंस के खिलाफ होगा जो इस लीग की सबसे मजबूत टीम है। गुजरात टाइटंस और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलूर के बीच होने वाला मुकाबला लीग का अंतिम मुकाबला है। बता दें कि मुंबई इंडियंस प्लेऑफ की रेस में बनी हुई है जो वर्तमान में छठे नंबर पर है। 13 मुकाबले खेलने के बाद 14 अंकों के साथ टीम अब भी प्लेऑफ में पहुंच सकती है। हालांकि इसके लिए मुंबई इंडियंस को नेट रनरेट में सुधार करना होगा और अंतिम मुकाबले में जीत भी हासिल करनी होगी। वर्तमान में मुंबई इंडियंस का नेट रनरेट -0.128 है। वहीं राजस्थान रॉयल्स और कोलकाता नाइट राइडर्स के पास भी प्लेऑफ में बने रहने की उम्मीद है।

जो मजा गरदा उड़ा दिया मैं है वो hits it out of the stands में कहा, रवि किशन की भोजपुरी कमेंट्री पर बोले वेदांता के बरस

आईपीएल फाइनल में मुश्किल से 10 दिनों का वक्त बचा है। आईपीएल का लीग मैच अपने आखिरी चरण पर है। इसके साथ ही हैं आज या कल में आईपीएल की टॉप 4 टीमों का निर्धारण भी हो जाएगा। इस बार आईपीएल में भोजपुरी कमेंट्री भी देखने को मिला। सुप्रसिद्ध भोजपुरी अभिनेता और सांसद रवि किशन भोजपुरी में कमेंट्री करते नजर आए। अब रवि किशन की कमेंट्री के बिजनेस टाइकून अनिल अग्रवाल भी फैन हो गए हैं। तभी तो उन्होंने अपने पोस्ट के जरिए दिल की बात लिख दिया है। सोशल मीडिया पर, वेदांता रिसोर्सिज लिमिटेड के चेयरमैन ने टिवटर पर अपने 168.1ज़ फॉलोअर्स के साथ अपना अनूठा अनुभव साझा किया।



उन्होंने कहा कि भोजपुरी कमेंट्री यह सुनकर मुझे खुशी हुई, मुझे लगा कि मैं घर वापस दोस्तों के साथ मैच पर चर्चा कर रहा हूँ। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि हमारी सभी क्षेत्रीय भाषाएं सुंदर हैं। क्रिकेट कमेंट्री को सभी के लिए समझने योग्य बनाना स्वागत योग्य है। अब जो मजा शरदा उड़ा दिया मैं है वो शहिद इट आउट ऑफ द स्टैंड्स में कहा... ने उन्हें उनके बचपन और बिहार के दोस्तों की याद दिला दी। अपनी यादों को साक्षात् करते हुए अनिल अग्रवाल ने लिखा कि जब मैंने पहली बार क्रिकेट देखना शुरू किया था तो कमेंट्री केवल अंग्रेजी में होती थी। इसके साथ ही उन्होंने लिखा कि कुछ समझ में आ जाता और कुछ सर के ऊपर से निकल जाता। लेकिन क्रिकेट का खेल इतना दिलचस्प था हम बिना ऑडियो के भी देखते थे। उन्होंने आगे लिखा कि अभी कुछ दिन पहले मैंने भोजपुरी में क्रिकेट कमेंट्री सुनी जिसमें रवि किशन ने कहा - ई गंद गईल छपरा रेलवे स्टेशन के टिकट काउंटर पे..

हिरोशिमा शब्द सुनते ही आज भी डर जाती है दुनिया, महात्मा गांधी की प्रतिमा का अनावरण करते हुए बोले पीएम मोदी

जापान के इस शहर में शांति के दूत महात्मा गांधी की प्रतिमा का अनावरण करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को कहा कि दुनिया आज भी हिरोशिमा शब्द सुनकर भयभीत हो जाती है। शुक्रवार को जी7 शिखर सम्मेलन के लिए

जापान पहुंचे मोदी ने हिरोशिमा में गांधी की 42 इंच की कांस्य प्रतिमा का अनावरण करने के बाद यह टिप्पणी की। मोतोयासु नदी से सटे बस्ट साइट में हर दिन हजारों लोग स्थानीय और पर्यटक समान रूप से आते हैं। उन्होंने प्रतिमा का अनावरण करने के बाद कहा कि आज भी दुनिया हिरोशिमा शब्द सुनकर भयभीत हो जाती है। जी7 शिखर सम्मेलन के लिए जापान की यात्रा के दौरान मुझे महात्मा गांधी की एक आवक्ष प्रतिमा का अनावरण करने का अवसर मिला। पीएम मोदी ने कहा कि मैं जापान सरकार को हिरोशिमा में मूर्ति स्थापित करने और उसका अनावरण करने का अवसर देने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ। मोदी ने कहा कि दुनिया आज जलवायु परिवर्तन और आतंकवाद से जूझ रही है और गांधी के आदर्शों पर चलकर ही जलवायु संकट के खिलाफ लड़ाई को जीता जा सकता है। उन्होंने कहा कि गांधी को सच्ची श्रद्धांजलि उनके आदर्शों पर चलना होगा। हिरोशिमा में महात्मा गांधी की मूर्ति स्थापित करने के विचार को आगे बढ़ाएंगी। मेरे लिए यह जानना एक महान क्षण है कि मैंने जापानी प्रधान मंत्री को जो बोधि वृक्ष उपहार में दिया था, वह यहां हिरोशिमा में लगाया गया है ताकि लोग यहां आने पर शांति के महत्व को समझ सकें। मैं महात्मा गांधी को अपना सम्मान देता हूँ।

यूएस ने लगाया बैन तो मड़क गया रूस, बराक ओबामा समेत 500 अमेरिकी नागरिकों की एंटी कर दी बैन

पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा पर रूस ने अपने देश में प्रवेश करने पर प्रतिबंध लगा दिया है। रूस के मंत्रालय के एक बयान के अनुसार कहा गया कि वो 500 अमेरिकियों पर प्रतिबंध लगा रहा है, जिसमें अमेरिकी कार्यकारी शाखा के कई वरिष्ठ सदस्य शामिल हैं। ओबामा के अलावा, सूची में पूर्व अमेरिकी राजदूत जॉन हंट्समैन, कई अमेरिकी सीनेटर और संयुक्त प्रमुखों के अगले अपेक्षित अध्यक्ष चार्ल्स क्यू ब्राउन जूनियर भी शामिल हैं। प्रसिद्ध अमेरिकी देर रात टीवी शो के मेजबान जिमी किमेल, कोलबर्ट और सेठ मेयर्स भी हैं जिन्हें रूस द्वारा देश में प्रवेश करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। सीएनएन के अनुसार, रूसी विदेश मंत्रालय ने अपने बयान में कहा है कि संलग्न रूसी-500 में सरकार और कानून प्रवर्तन एजेंसियों के वे लोग भी शामिल हैं जो उपाधिकृत सर्वोच्च गैर कैपिटल के महेनजर असंतुष्टों के उत्पीड़न में सीधे तौर पर शामिल हैं। रूसी विदेश मंत्रालय ने कहा कि अमेरिका को ये बात बहुत पहले ही सीख लेना चाहिए था कि हमारे खिलाफ एक भी दुश्मनी वाला फैसलें को हम यूं ही नहीं छोड़ेंगे। रूस ने जिन अमेरिकियों पर बैन लगाया है उनमें बराक ओबामा के अलावा टेलीविजन होस्ट स्टीफन कोलबर्ट, जिमी किमेल और सेठ मेयर्स भी शामिल थे। रूसी मंत्रालय ने अपनी वेबसाइट पर एक बयान में प्रतिबंधों को उचित ठहराया, जिसमें कहा गया कि वाशिंगटन के लिए यह सीखने का सही समय है कि रूस के खिलाफ एक भी शत्रुतापूर्ण हमला पर जवाब मिलेगा। रूस के इस कदम को अमेरिका के उस फैसले का जवाब माना जा रहा है, जिसमें अमेरिका ने रूस की सैकड़ों कंपनियों और व्यक्तियों को ब्लैकलिस्ट कर दिया था।

हर तरफ देखने को मिल रहा धोनी का ब्रेज, थाला के लिए दिल्ली में बिके सभी टिकट

इंडियन प्रीमियर लीग 2023 में महेंद्र सिंह धोनी की अगुवाई में चेन्नई सुपर किंग्स दिल्ली के मैदान में बेहद अहम मुकाबले में दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ खेलने उतरेगी। सीएसके के लिए ये मुकाबला बेहद अहम है क्योंकि इस मुकाबले में जीत हासिल करने के बाद टीम सीधे प्लेऑफ के लिए क्वालीफाई कर सकेगी। वहीं दिल्ली के होम ग्राउंड अरुण जेटली स्टेडियम में होने वाले इस मुकाबले में दूसरी बार दोनों टीमों आमने सामने होंगी। इस सीजन में जब पहली बार दोनों टीमों भिड़ी थी तो धोनी ब्रिगेड ने जीत हासिल की थी।

वहीं एक तरफ दिल्ली कैपिटल्स लीग से पहले ही बाहर हो चुकी है मगर चेन्नई सुपर किंग्स को प्लेऑफ के लिए 20 मई को होने वाला मुकाबला जीतना जरूरी है। चेन्नई सुपर किंग्स चार बार की आईपीएल चैंपियन है। प्लेऑफ में पहुंचने वाली टीमों के मुकाबले 23 मई से शुरू होंगे जबकि 21 मई को लीग मुकाबले खत्म होंगे। वहीं 24 मई को एलिमिनेटर मुकाबला खेला जाएगा। ये मुकाबले चेन्नई

सुपर किंग्स के घरेलू मैदान चेंपोक स्टेडियम में होंगे।

सभी टिकट बिके बता दें कि इस मुकाबले में चेन्नई सुपर किंग्स के खेलने की संभावना है। ऐसे में महेंद्र सिंह धोनी को लेकर फैंस में खासा क्रेज देखने को मिल रहा है। चेंपोक स्टेडियम में 36 हजार सीटें हैं। स्टेडियम में 20 फीसदी टिकट लोकल एसोसिएशन और ब्रॉडकास्टर को दिए जाते हैं। वहीं कुल 28 हजार सीटें दर्शकों के लिए

रखी गई हैं। इनमें से 23 हजार सीटों के लिए टिकट बिक चुके हैं। दर्शक और खास तौर से महेंद्र सिंह धोनी के फैंस उन्हें मैदान पर देखने के लिए काफी उत्साहित हैं।

दिल्ली से भिड़ेगी चेन्नई करिश्माई कप्तान महेंद्र सिंह धोनी की अगुवाई में चेन्नई सुपर किंग्स शनिवार को दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में दिल्ली कैपिटल्स की टीम के खिलाफ जीत दर्ज करके इंडियन प्रीमियर



लीग (आईपीएल) के प्लेऑफ में अपनी जगह सुरक्षित करने उतरेगी। दिल्ली की टीम प्लेऑफ की दौड़ से पहले ही बाहर हो चुकी है। हालांकि टीम चाहेगी की घरेलू मैदान में जीत हासिल कर टूर्नामेंट का समापन करे। दिल्ली की जीत से चेन्नई के प्लेऑफ में पहुंचने के सभीकरणों में कई बदलाव देखने को मिल सकते हैं। चेन्नई की टीम अभी 13 मैचों में 15 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर है लेकिन दिल्ली

के खिलाफ हार से उसकी प्लेऑफ में पहुंचने की संभावना क्षीण पड़ जाएगी। इस मैच में जीत से चेन्नई का प्लेऑफ में स्थान पक्का हो जाएगा लेकिन वह दूसरे स्थान पर रहेगी या नहीं इसका निर्धारण लखनऊ सुपरजायंट्स और कोलकाता नाइट राइडर्स के बीच होने वाले मैच से तय होगा। दिल्ली में संभवतः अपना आखिरी मैच खेल रहे धोनी परिस्थितियों का पूरा लाभ उठाने का प्रयास

करेंगे।

चेन्नई की बल्लेबाजी मजबूत बल्लेबाजी चेन्नई का मजबूत पक्ष है। शीर्ष क्रम में डेवोन कॉनवे, रुतुराज गायकवाड और अजिंक्य रहाणे टीम को अच्छी शुरुआत दे रहे हैं। अंबाती रायडू, रविंद्र जडेजा और मोईन अली को हालांकि बीच के ओवरों में शिवम दुवे का अच्छा साथ देने की जरूरत है। धोनी ने

अंतिम ओवरों में अपनी आक्रामक बल्लेबाजी का अच्छा नमूना पेश किया है और टीम को कप्तान से फिर से इसी तरह के प्रदर्शन की उम्मीद होगी। गेंदबाजी में तुषार देशपांडे महंगे साबित हुए हैं लेकिन उन्होंने विकेट हासिल किए हैं जबकि श्रीलंका के युवा तेज गेंदबाज मथीशा पथिराना ने अपनी भूमिका अच्छी तरह से निभाई है। स्पिन विभाग में जडेजा, मोईन अली और महेश

तीक्ष्णा ने भी अच्छा प्रभाव छोड़ा है। दिल्ली ने पहले चरण में लगातार पांच मैच गंवाए लेकिन इसके बाद उसने कुछ लय हासिल की और अगले आठ में से पांच मैचों में जीत दर्ज की। दिल्ली की टीम पंजाब किंग्स पर 15 रन की मनोबल बढ़ाने वाली जीत के बाद इस मैच में उतरेगी। डेविड वॉर्नर की अगुवाई वाली टीम इस मैच में भी बिना किसी टबाव के खेलेगी और ऐसे में चेन्नई को उससे सतर्क रहना होगा। अक्षर पटेल को छोड़कर दिल्ली की टीम में शामिल अन्य भारतीय बल्लेबाज इस सत्र में नाकाम रहे लेकिन उससे विदेशी बल्लेबाजों कप्तान वॉर्नर, मिशेल मार्श, फिल सॉल्ट और रिची रोसोव ने अच्छी पारियां खेली हैं। दिल्ली ने अब तक जितने भी मैच जीते उनमें उसके गेंदबाजों की भूमिका अहम रही है। अक्षर पटेल और कुलदीप यादव ने स्पिन विभाग अच्छी तरह से संभाला है जबकि तेज गेंदबाज इशांत शर्मा और खलील अहमद ने भी अच्छा प्रदर्शन किया है। दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाज एनरिक नोर्किंया ने भी लय हासिल कर ली है।

कैबिनेट ने पांच गारंटी को सैद्धांतिक तौर पर मंजूरी दी है, सिद्धारमैया बोले- लोगों की अपेक्षाओं के अनुसार शासन देगे

कर्नाटक में आज सिद्धारमैया ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ले ली। उनके साथ डीके शिवकुमार उप मुख्यमंत्री बने हैं। वहीं आठ अन्य विधायकों को मंत्री बनाया गया है। कैबिनेट की पहली बैठक में कांग्रेस सरकार ने उन 5 गारंटियों को लेकर आदेश पारित किया है जिसको चुनावी मेनिफेस्टो में कहा गया था। सिद्धारमैया ने कहा हमने मंत्रिमंडल की पहली बैठक में कांग्रेस की पांच गारंटी को सैद्धांतिक तौर पर मंजूरी दी है। प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान सीएम सिद्धारमैया ने कहा कि घोषणा पत्र में पांच गारंटियों का वादा किया गया था और उन पांचों गारंटियों को लागू करने का आदेश कैबिनेट की पहली बैठक के बाद दिया गया था। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि अगली कैबिनेट बैठक के बाद सभी लागू होंगे जिसे एक सप्ताह के भीतर बुलाया जाएगा। सिद्धारमैया ने कहा कि जो

सरकारें पहले चलती थीं वे बेकार थीं, वे हमें करों का हिस्सा केबिनेट की बैठक में पांच गारंटी को पारित किया जाएगा और उन्हें लागू करने के लिए आज ही एक आदेश जारी किया जाएगा।

कांग्रेस ने कर्नाटक में सत्ता में आने के बाद पहले दिन 'पांच गारंटी' लागू की वादा किया है। इन वादों में सभी घरों को 200 यूनिट मुफ्त बिजली (गृह ज्योति), हर परिवार की महिला मुखिया (गृह लक्ष्मी) को 2,000 रुपये मासिक सहायता, गरीबी रेखा से नीचे (बीपीएल) के परिवार के प्रत्येक सदस्य को 10 किलोग्राम मुफ्त चावल (अन्न भाग्य), बेरोजगार स्नातक युवाओं के लिए हर महीने 3,000 रुपये और बेरोजगार डिप्लोमा धारकों (18-25 आयु वर्ग में) को दो साल के लिए 1,500 रुपये (युवा निधि) और सार्वजनिक परिवहन बसों (शक्ति) में महिलाओं के लिए मुफ्त यात्रा शामिल हैं।

कैबिनेट की बैठक में पांच गारंटी को पारित किया जाएगा और उन्हें लागू करने के लिए आज ही एक आदेश जारी किया जाएगा।

कांग्रेस ने कर्नाटक में सत्ता में आने के बाद पहले दिन 'पांच गारंटी' लागू की वादा किया है। इन वादों में सभी घरों को 200 यूनिट मुफ्त बिजली (गृह ज्योति), हर परिवार की महिला मुखिया (गृह लक्ष्मी) को 2,000 रुपये मासिक सहायता, गरीबी रेखा से नीचे (बीपीएल) के परिवार के प्रत्येक सदस्य को 10 किलोग्राम मुफ्त चावल (अन्न भाग्य), बेरोजगार स्नातक युवाओं के लिए हर महीने 3,000 रुपये और बेरोजगार डिप्लोमा धारकों (18-25 आयु वर्ग में) को दो साल के लिए 1,500 रुपये (युवा निधि) और सार्वजनिक परिवहन बसों (शक्ति) में महिलाओं के लिए मुफ्त यात्रा शामिल हैं।

चीन ने कश्मीर में जी20 बैठक का किया बहिष्कार

क्या तुर्की और सऊदी अरब भी कर रहे हैं किनारा?

चीन द्वारा पाकिस्तान के साथ अनुचित संदर्भ दिए हैं। की सुबह तक जारी रहेगी। एक संयुक्त बयान में कश्मीर मुद्दे को उठाने के कुछ दिनों बाद अब उसने कहा है कि वह अगले सप्ताह जम्मू और कश्मीर में नियोजित जी20 पर्यटन कार्य समूह की बैठक में शामिल नहीं होगा। चीन के विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि वो विवादित क्षेत्र में ऐसी बैठक आयोजित करने का दृढ़ता से विरोध करता है। चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता वांग वेनबिन द्वारा जारी एक औपचारिक बयान में कहा गया है कि चीन विवादित क्षेत्र पर किसी भी प्रकार की जी20 बैठक आयोजित करने का दृढ़ता से विरोध करता है।



उन्होंने कहा कि हम ऐसी बैठकों में शामिल नहीं होंगे। पाकिस्तान और चीन दोनों ने पहले भारतीय केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर पर बीजिंग और इस्लामाबाद के बयानों को भारत लगातार खारिज करता रहा है। विदेश मंत्रालय ने पाकिस्तान और चीन की टिप्पणियों पर पहले टिप्पणी की है। भारत ने इससे पहले भी कहा है कि हमने इस तरह के बयानों को लगातार खारिज किया है और संबंधित सभी पक्ष इन मामलों पर हमारी स्पष्ट स्थिति से अच्छी तरह वाकिफ हैं। केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर और केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख भारत के अभिन्न और अविच्छेद्य अंग हैं और केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख भारत के अभिन्न और अविच्छेद्य अंग हैं और रहेंगे। किसी अन्य देश के पास इस पर टिप्पणी करने का अधिकार नहीं।

पाकिस्तान और चीन दोनों ने पहले भारतीय केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर के लिए अनुचित संदर्भ दिए हैं। जम्मू-कश्मीर पर बीजिंग और इस्लामाबाद के बयानों को भारत लगातार खारिज करता रहा है। विदेश मंत्रालय ने पाकिस्तान और चीन की टिप्पणियों पर पहले टिप्पणी की है। भारत ने इससे पहले भी कहा है कि हमने इस तरह के बयानों को लगातार खारिज किया है और संबंधित सभी पक्ष इन मामलों पर हमारी स्पष्ट स्थिति से अच्छी तरह वाकिफ हैं। केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर और केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख भारत के अभिन्न और अविच्छेद्य अंग हैं और रहेंगे। किसी अन्य देश के पास इस पर टिप्पणी करने का अधिकार नहीं।



ANI

सफल आयोजन के लिए अधिकारीगण एवं वॉलेंटियर्स टीम भावना के साथ करें कार्य: डीएम

दैनिक बुद्ध का संदेश
गौतम बुद्ध नगर। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मंशा के अनुरूप जनपद गौतम बुद्ध नगर में 25 मई से 3 जून तक आयोजित होने वाले खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स 2022 को बहुत ही भव्य ढंग से संपन्न कराने के उद्देश्य से आज डीएम मनीष कुमार वर्मा ने गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय के ऑडिटोरियम में इवेंट में लगाए गए वॉलेंटियर्स को ब्रीफिंग करते हुए कहा कि यह हमारे प्रदेश एवं जनपद का सौभाग्य है कि इतना बड़ा इवेंट खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स 2022 में आयोजित होने जा रहा है। उन्होंने कहा कि इवेंट में लगाए गए वॉलेंटियर्स इस महत्वपूर्ण आयोजन की महत्ता

एवं गंभीरता को दृष्टिगत रखते हुए जिला प्रशासन के अधिकारियों के साथ आपसी सामंजस्य स्थापित करते हुए अपनी अपनी भूमिका को गहनता से समझते हुए उनका निर्वहन करें, ताकि खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स 2022 को जनपद में मा0 मुख्यमंत्री जी की मंशा के अनुरूप भव्य रूप से संपन्न कराया जा सके और आयोजित होने वाले इवेंट में अन्य राज्यों से आने वाले खिलाड़ी एवं मैजबान हमारे प्रदेश एवं जनपद के बारे में एक अच्छा संदेश लेकर जाएं। उन्होंने कहा कि इवेंट में



प्रतियोगिता में भाग लेने वाले खिलाड़ी एवं मैजबानों के ठहरने की व्यवस्था, खाना एवं जलपान

में लगाए गए वॉलेंटियर्स को पावर प्रजेंटेशन के माध्यम से उनकी भूमिकाओं के बारे में बहुत ही गहनता के साथ अवगत कराया एवं इवेंट में लगाए गए जिला प्रशासन के अधिकारियों से भी उनका परिचय कराया गया कि किस अधिकारी को इवेंट के दौरान क्या दायित्व सौंपे गए हैं। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व वंदिता श्रीवास्तव, उप जिलाधिकारी सदर अंकित कुमार, जिला पूर्ति अधिकारी चमन शर्मा, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी ऐश्वर्या लक्ष्मी, जिला विद्यालय निरीक्षक डॉ0 धर्मवीर सिंह, उप क्रीड़ा अधिकारी अनीता नागर तथा अन्य संबंधित अधिकारीगण एवं पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी गण उपस्थित रहे।

समर कैंप के समापन पर हेलो किड्स प्ले स्कूल में फ्रूट डे पर बच्चों ने जाना फलों का महत्व

दैनिक बुद्ध का संदेश
सोनभद्र। पिछले 1 हफ्तों से हेलो किड्स प्ले स्कूल में समर कैंप का आयोजन किया गया था। जहां विभिन्न प्रकार के एक्टिविटी कराई गई जैसे आर्ट एंड क्राफ्ट, पर्सनैलिटी डे व ल प मं क ल, फिजिकल एक्टिविटी, डांस, योगा, पिक डे, पर्यावरण संरक्षण, फ्रूट डे जैसे तमाम एक्टिविटी को समर कैंप के तहत मनाया गया। फ्रूट-डे के अवसर पर हेल्लो किड्स प्ले स्कूल रावस्ट-सर्गज में बच्चों को फलों के महत्व की जानकारी दी गई। नौनिहालों को फल खिलाते हुए उनके गुणों के बारे में बताया गया। प्रधानाचार्य



चंद्र प्रकाश सिंह ने बच्चों को कई प्रकार के फल परोसे गए। बताया कि फलों का आहार में फल पार्टी में बच्चों ने खूब मस्ती की। विद्यालय की शिक्षिकाओं ने बच्चों को आम, सेब, अंगूर, केला, अमरूद, नाशपाती एवं अनार आदि फलों को दिखाकर उनके गुणों के बारे में बताया। बच्चों ने विभिन्न फलों के आकार की बनी ड्रेस भी पहनी। इस कार्यक्रम की संयोजिका पूजा सिंह के मार्गदर्शन में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर, शिक्षिकाएं रजनी अग्रहरी फलों का सेवन कदापि नहीं मीनू सोनी व अंजलि केसरी करना चाहिए। इस दौरान बच्चों सहित तमाम अभिभावक व बच्चे को फलों की पार्टी दी गई जिसमें मौजूद रहे।

नवनिर्वाचित सभासद मयंक को एमएलसी ने किया सम्मानित

दैनिक बुद्ध का संदेश
उसका बाजार, सिद्धार्थनगर। नगर क्षेत्र के माथुर नगर वार्ड से



नव निर्वाचित सभासद मयंक पाण्डेय ने वार्ड के मतदाताओं से मिले अपार सहयोग, प्यार और मतरूपी आशिर्वाद के लिए आभार ज्ञापित किया है। उन्ही के वार्ड में शनिवार को एमएलसी ध्रुव कुमार त्रिपाठी, शिक्षक राम उजगिर पाण्डेय, भाजपा नेता रामेश्वर पाण्डेय आदि लोगों ने नवनिर्वाचित सभासद मयंक पाण्डेय को पुष्प गुच्छ भेंट कर माल्यार्पण कर और अंग वस्त्र से उन्हें सम्मानित किया है। नवनिर्वाचित सभासद ने कहा कि नागरिकों का यह ऋण वार्ड के चहुँमुखी विकास के रूप में ब्याज सहित प्रतिफलित होगा। मयंक पाण्डेय हाल ही में संपन्न हुए निकाय चुनाव में सम्बंधित वार्ड से सभासद पद के लिए शानदार जीत दर्ज कराया है। वार्ड के मतदाताओं के पहले पसंद के रूप में निर्वाचित युवा मयंक पाण्डेय ने बताया कि वार्ड में मूलभूत सुविधाओं मुहैया कराते हुए नागरिकों के भरोसे पँर खरा उत्तरना उनकी पहली प्रमुखता होगी।

पिकअप की चपेट में आने से साइकिल सवार की मौत

महाराजगंज। गोरखपुर-सोनौली राष्ट्रीय राजमार्ग पर मुड़िला गांव के पास पिकअप की चपेट से साइकिल सवार की मौत हो गई। जानकारी के मुताबिक, नौतनवां थाना क्षेत्र के गांव बाबू पैसिया निवासी 55 वर्षीय मकोधर यादव उर्फ कोटर की बेटी की शादी है। वह किसी काम से साइकिल से नौतनवां जा रहे थे। मुड़िला गांव के पास पैसिया बाबू गांव की तरफ से नौतनवां जा रही तेज रफ्तार पिकअप ने पीछे से मकोधर को चपेट में ले लिया।

बुद्ध का संदेश

(हिन्दी दैनिक समाचार पत्र)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक
श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा बुद्धा प्रिन्टर्स, ज्योति
नगर मधुकरपुर, निकट-हीरो होण्डा एजेन्सी,
जनपद-सिद्धार्थनगर (30प्र0) 272207 से मुद्रित
एवं प्रकाशित।
आर.एन.आई. नं.-UPHIN/2012/49458

संस्थापक
स्व. के.सी. शर्मा
सम्पादक
राजेश कुमार शर्मा

☎ 9415163471, 9453824459

📘 दैनिक बुद्ध का संदेश

📞 9795951917, 9415163471

🐦 @budhakaasandesh

✉ budhakaasandeshnews@gmail.com

🌐 www.budhakaasandesh.com

.....

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट. के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद जनपद-सिद्धार्थनगर न्यायालय के अधीन ही मान्य होगा।

शिक्षण संस्थाएं समाज की धरोहर: एमएलसी

दैनिक बुद्ध का संदेश
विधायक ध्रुव कुमार त्रिपाठी ने कहा। इससे पूर्व मुख्य अतिथि ने



शिक्षा मानव समाज के लिये बहुत ही आवश्यक है। शिक्षा बिना मनुष्य कुछ भी विकास नहीं कर सकता। इसके लिए बेहतर शिक्षण संस्थाएं जरूरी हैं और ये संस्थाएं समाज की धरोहर हैं। यह बातें जनता इंटर कॉलेज बनिघाडीह, लोटन में विद्यालय के संस्थापक प्रबंधक स्व माधवेश्वर प्रसाद मिश्र के मूर्ति अनावरण एवं शिक्षक विधायक निधि 1 से निर्मित कक्ष लोकार्पण समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि शिक्षक



मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन किया। छात्राओं ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत किया तथा स्वागत गीत द्वारा मुख्य अतिथि का स्वागत किया। इस अवसर पर एमएलसी ने कहा कि आज शिक्षकों एवं कर्मचारियों के समक्ष बहुत बड़ी चुनौती है क्योंकि सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों का भौतिक ढांचा जर्जर हो चुका है जिसके पुनरुद्धार की जरूरत है। हमसे जो भी हो सकेगा संस्था के विकास में यथासंभव सहयोग देने का प्रयास करेंगे। बेरोजगारी पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि हमारे देश में कितना हास्यास्पद है कि बीटेक चायवाला, बीटेक आमलेट

वाला, बीटेक पकोड़ा वाला, दुकानें खुली हैं। क्या इसी दिन रात के शिक्षकों और कर्मचारियों से अपनी जिम्मेदारियों का बेहतर निर्वहन

करने का आह्वान किया जिससे छात्र-छात्राओं अभिभावकों एवं जन सामान्य में विश्वास कायम हो सके। इस अवसर पर किसान इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य गोपेश्वर चौबे, पूर्व प्रधानाचार्य वीरेंद्र नाथ पाण्डेय, सुखदेव पाण्डेय, पूर्व प्रिधानाचार्य बाबा हरिदास इंटर कॉलेज कंपनी में लगाया जा रहा है जिसका कोई अता पता नहीं क्या होगा। नौजवान अपने भविष्य को लेकर आशंकित हैं। उन्होंने सरकार पर तंज कसते हुए कहा सबका साथ, सबका विकास, और सबका विश्वास नारा देने वाली सरकार अपने तो मन की बात सुना देती है लेकिन महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, गरीबी के दर्द से कराह रही जनता के मन की बात कब सुनेगी। अंत में उन्होंने

जनपद सिद्धार्थनगर के महत्वपूर्ण नम्बर

जिलाधिकारी	मो:0-- 9454417530
मुख्य विकास अधिकारी	मो:0-- 9454464749
एस डीएम नौगढ़	मो:0-- 9454415936
एस डीएम बांसी	मो:0-- 9454415937
एस डीएम डुमरियागंज	मो:0-- 9454415939
एस डीएम इटवा	मो:0-- 9454415939
एस डीएम शोहरतगढ़	मो:0-- 9454415940
पुलिस अधीक्षक	मो:0-- 9454400305
याना मोहाना	मो:0-- 9454404239
याना जोगिया उदयपुर	मो:0-- 9454404235
याना गोलौरा	मो:0-- 9454404233
याना पथरा बाजार	मो:0-- 9454404240
याना त्रिलोकपुर	मो:0-- 9454404243
याना उसका बाजार	मो:0-- 9454404244

राष्ट्रीय दैनिक बुद्ध का संदेश

याना शोहरतगढ़	मो:0-- 9454404241
याना खेसरहा	मो:0-- 9454404236
याना इटवा	मो:0-- 9454404234
याना चिल्हिया	मो:0-- 9454404229
याना देवरुआ	मो:0-- 9454404230
याना भवानीगंज	मो:0-- 9454404228
याना मिश्रौलिया	मो:0-- 9454404238
याना सि0नगर	मो:0-- 9454404242
याना डुमरियागंज	मो:0-- 9454404232
याना लोटन	मो:0-- 9454404237
महिला याना	मो:0-- 9454404891

अविवेकपूर्ण रसायनों के प्रयोग से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव : जनार्दन कटियार

फसलो में लगने वाले कीट, रोग नियन्त्रण संबंधित दी गयी जानकारी

दैनिक बुद्ध का संदेश
सोनभद्र। जिला कृषि रक्षा अधिकारी जनार्दन कटियार ने शुक्रवार को जानकारी देते हुए बताया फसलों में प्रतिवर्ष कीट, रोग एवं खरपतवारों से होने वाली क्षति एवं कृषि रक्षा रसायनों के अविवेकपूर्ण प्रयोग से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव के दृष्टिगत परम्परागत कृषि विधियों तथा-मेड़ों की साफ-सफाई ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई एवं फसल अवशेष प्रबन्धन के साथ-साथ भूमि शोधन एवं बीज शोधन को अपनाया जाना नितान्त आवश्यक है। इससे कीट, रोग एवं खरपतवार का प्रकोप कम होने के साथ उत्पादन में वृद्धि होती है, तथा कृषकों की उत्पादन लागत कम होने से उनकी आय में वृद्धि होती है। इन विधियों को अपनाने से पर्यावरणीय प्रदूषण भी कम होता है। भूमि शोधन हेतु जैविक फफूंदनाशक ट्राईकोडर्मा 2.5 किग्रा0थेड0 एवं ब्यूवेरिया बैसियाना 1 प्रतिशत डब्ल्यू0पी0 बायोपेस्टीसाइड्स 2.5 किग्रा0थेड0 को 65 से 75 किग्रा0 गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छीटा देकर 08 से 10 दिन छाया में रखने के उपरान्त बुवाई के पूर्व व आखिरी जुताई पर भूमि में मिला देने से विभिन्न प्रकार की बीमारियों एवं कीटों का नियंत्रण हो जाता है। बुवाई से पूर्व 2.5 ग्राम थीरम 75 प्रतिशत डी एस अथवा कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यू0पी0 2 ग्राम अथवा यथा सम्भव ट्राईकोर्डमा 4 से 5 ग्राम प्रति किग्रा0 बीज की दर से शोधित करने से बीज जनित रोग जैसे-बीज गलन, उकठा का नियंत्रण हो जाता है, उन्होंने बताया कि फसलो में लगने वाले कीट रोग के नियन्त्रण से संबंधित जानकारी जिला कृषि रक्षा अधिकारी कार्यालय सोनभद्र से सम्पर्क किया जा सकता है।



ओबरा में स्नातक (बी.ए., बी.एससी., बी.काम.) प्रथम वर्ष शैक्षणिक सत्र 2023-24 में प्रवेश हेतु आवेदन पत्र महाविद्यालय की वेबसाइट www.obra.ac.in पर दिये गये निर्देशों के अनुसार 15 जून 2023 तक आवेदन पत्र भर दें। अभ्यर्थी भरे हुए आवेदन पत्र का प्रिंट लेने से पूर्व उसे ध्यानपूर्वक पढ़ लें ताकि उनसे सम्बन्धित कोई भी सूचना गलत ना हो।

निर्माण कार्यों की जाँच करने वाली गठित कमेटी, प्रगति की सुस्पष्ट आख्या करे प्रस्तुत-जिलाधिकारी

दैनिक बुद्ध का संदेश
सोनभद्र। जिलाधिकारी चंद्र विजय सिंह ने अवगत कराया कि जनपद में विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत भवन, सड़क व अन्य निर्माण कार्य कार्यदायी संस्थाओं द्वारा कराया जा रहा है। निर्माण कार्यों का जनपद स्तरीय अधिकारियों की कमेटी गठित कर सत्यापन कराया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि कमेटी द्वारा प्रायः कार्यों की तथ्यपरक जांच न करके यह टिप्पणी अंकित कर दी जाती है कि कार्यों की गुणवत्ता संतोषजनक है। यह स्थिति सर्वथा उचित नहीं है अतः उपरोक्त के संबंध में जनपद स्तरीय अधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि वह स्थलीय निरीक्षण के दौरान स्वीकृत आगणन में प्रावधानित कार्यध्वंसे पजमउं की प्रगति मानक के संबंध में स्पष्ट आख्या उपलब्ध कराया जाना सुनिश्चित करें। जिससे की कराये जा रहे निर्माण कार्यों की गुणवत्ता का बेहतर ढंग से मुल्यांकन किया जा सके, सड़को भवनों के निर्माण के जाँच हेतु गठित समिति द्वारा उक्त जाँच के मामले किसी प्रकार की शिथिलता न बरती जाये।

शाहिद कपूर के साथ एक्शन-कॉमेडी में नजर आएंगी रश्मिका मंदाना, अनीस बज्मी संभालेंगे निर्देशन की कमान

दक्षिण भारतीय सिनेमा की मशहूर अभिनेत्री रश्मिका मंदाना पुष्पा द राज की सफलता के बाद से काफी लोकप्रिय हो गई हैं और हिंदी फिल्म निर्माताओं के लिए पहली पसंद बनती जा रही हैं। अभिनेत्री ने पिछले साल ही अमिताभ बच्चन के साथ गुडबाय से बॉलीवुड में कदम रखा था और अब उनके पास कई सारी हिंदी फिल्मों हैं। अब हालिया रिपोर्ट्स के अनुसार, रश्मिका शाहिद कपूर के साथ एक एक्शन-कॉमेडी में नजर आने वाली हैं, जिसका निर्देशन अनीस बज्मी करेंगे। एक रिपोर्ट के अनुसार, अनीस के निर्देशन में बन यह फिल्म एकता कपूर और दिल राजू द्वारा निर्मित होगी, जिसमें पहली बार रश्मिका और शाहिद की जोड़ी बनने जा रही है। इस फिल्म के बारे में सूत्र ने बताया कि रश्मिका के साथ एकता और राजू दोनों गुडबाय और वरिसु में पहले काम कर चुके हैं। ऐसे में और उनका मानना है कि वह स्वाभाविक रूप से इस फिल्म के लिए सबसे सही साबित होंगी। दोहरी भूमिका निभाएंगे शाहिद? रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि इस एक्शन-कॉमेडी में शाहिद दोहरी भूमिका में नजर आएंगे। जानकारी के मुताबिक, इस अनटाइटल्ड फिल्म की कहानी काफी मजेदार होगी और इसमें भरपूर एक्शन देखने को मिलेगा। साथ ही अभिनेता की दोहरी भूमिका इसे और भी मजेदार बना देगी, जिसको लेकर प्रशंसक भी उत्सुक हैं। कहा जा रहा है कि अनीस ने स्क्रिप्ट लगभग



प्री-प्रोडक्शन शुरू होगा। फिल्म है। पहले भी शाहिद के साथ रश्मिका और शाहिद के साथ भी आई थीं। उस दौरान कहा आने वाली हैं। इसके अलावा

जा रहा था कि वह अभिनेता के साथ जर्सी के हिंदी रीमेक में नजर आ सकती हैं। हालांकि, रश्मिका की जगह इस फिल्म में मृणाल टाकुर की शाहिद के साथ जोड़ी बनी थी। अब शाहिद और रश्मिका के पहली बार पर्दे पर साथ आने की खबरें सामने आने के बाद से ही प्रशंसक काफी खुश हो गए हैं। इन बॉलीवुड फिल्मों का हिस्सा हैं रश्मिका रश्मिका को पिछले कुछ महीनों में कई बॉलीवुड फिल्मों की पेशकश की गई है। वह गुडबाय के अलावा सिद्धार्थ मल्होत्रा के साथ मिशन मजनु में दिखाई दी थीं और अब वह रणबीर कपूर के साथ संदीप रेड्डी वंगा की एनिमल में नजर आने वाली हैं। इसके अलावा रश्मिका दिनेश विजान के ऐतिहासिक महाकाव्य छावा का भी हिस्सा हो सकती हैं, जिसमें वह विक्की कौशल के साथ नजर आएंगी। हालांकि, अभी इस फिल्म को लेकर आधिकारिक घोषणा नहीं हुई है। शाहिद की आगामी फिल्में शाहिद रॉय कपूर फिल्म्स के साथ रोशन एंज्रूज की फिल्म में पूजा हेगड़े के साथ नजर आने वाले हैं। यह मलयालम थ्रिलर फिल्म मुंबई पुलिस का हिंदी रीमेक है। इसके बाद शाहिद के पास अली अब्बास जफर की ब्लडी डेडी है, जो 9 जून को रिलीज होने वाली है। इसके अलावा वह कृति सैनन के साथ दिनेश विजान की एक अनटाइटल्ड फिल्म का हिस्सा हैं, जिसका पोस्टर जारी हो चुका है। यह फिल्म इस साल अक्टूबर में रिलीज होगी।

नशे में धुत होकर इंटीमेट सीन करती थी ये एक्ट्रेस, मां से लगता था डर !

नायरा बनर्जी तेलुगू, तमिल, मलयालम और हिंदी फिल्मों में काम कर चुकी हैं। उनके करियर की शुरुआत साउथ फिल्म इंडस्ट्री से हुई थी लेकिन हिंदी फिल्मों में भी उनका नाम चर्चा में रहा है। खासतौर पर साल 2016 में आई वन नाइट स्टैण्ड में उनके काम ने खूब सुर्खियां बटोरी थीं। दरअसल नायरा ने इस



फिल्म में काफी बोल्ल सीन दिए थे। इन सीन्स की वजह से उनका नाम चर्चा में रहा था...हालांकि ये सीन शूट करना उनके लिए बिल्कुल भी आसान नहीं था। नायरा ने जब बोल्ल सीन शूट करने से जुड़े अपने एक्सपीरियंस शेयर किए तो लोग हैरान रह गए कि उन्हें स्क्रीन पर कंफर्टेबल दिखने के लिए ये सब करना पड़ा। नायरा ने बताया कि फिल्म में उन्हें इंटीमेट सीन करने थे। सीन सुनते वक्त तो उन्हें सब कुछ नॉर्मल ही लगा लेकिन जब शूटिंग की बारी आई तो वे नर्वस हो गईं। उन्हें पूरी क्रू के सामने बोल्ल सीन देने और वो एक्सप्रेशन और मूड लाने में दिक्कत आने लगी। नायरा अपनी नर्वसनेस से परेशान होने लगीं। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि कौनसी तरकीब अपनाई जाए कि सीन भी ओके हो जाए और वह कंफर्टेबल भी रहें। काफी दिमाग चलाने के बाद उन्हें शराब की याद आई। जी हां सुनने में अटपटा जरूर लग रहा होगा लेकिन नायरा ने वाकई इंटीमेट सीन्स के दौरान नर्वस ना दिखने के लिए शराब का सहारा लिया था। उन्होंने बताया कि इन सीन की शूटिंग से पहले वह शराब पीती थीं और उसी के नशे में शूटिंग शुरू करती थीं। इसके बाद उनके दिमाग से वो खयाल निकल जाते थे जो उन्हें पहले आते थे। वह सेट पर मौजूद लोगों की वजह से तो अनकंफर्टेबल होती ही थीं उन्हें यह भी डर रहता था कि मां उन्हें घर से ना निकाल दें। इस घबराहट से बचने के लिए नायरा ने नशे का सहारा लिया और शूटिंग पूरी होने के बाद क्रू मेंबर उनका नशा उतारने के लिए नींबू पानी दिया करते थे। जरा सोचिए क्या सीन है...शूटिंग के लिए एक्ट्रेस टल्ली और फिर होश में आने के लिए नींबू पानी का डोज।

उर्वशी रौतेला के हाथ लगी करण जौहर की फिल्म, पहली बार धर्मा प्रोडक्शंस संग करेंगी काम



उर्वशी जल्द ही फिल्म 365 में नजर आए अभिनेता मिशेल मोरोन के साथ हॉलीवुड में डेब्यू कर सकती हैं। इसके अलावा वह संपत नंदी की ब्लैक रोज और राम पोथिनेनी के साथ एक फिल्म में नजर आएंगी। वह रणदीप हुड्डा के साथ एक भी एक फिल्म का हिस्सा हैं। हाल ही में अभिनेत्री जेसन डेरुलो के साथ एक न्यूजिक वीडियो में काम किया है, जो भी जल्द ही रिलीज होने के लिए तैयार है। ऐसा रहा फिल्मी सफर: उर्वशी के फिल्मी सफर की बात करें तो उन्होंने 2013 में सिंह साहब द ग्रेट से बॉलीवुड में कदम रखा था। इसके बाद वह भाग जॉनी, सनम रे, ग्रेट ग्रेंड मस्ती, पागलपंती, हेट स्टोरी 4, दिल है ग्रे सहित कई फिल्मों का हिस्सा रहीं। बता दें कि उर्वशी इकलौती ऐसी भारतीय महिला हैं, जिन्होंने 2 बार मिस यूनिवर्स का खिताब अपने नाम किया है। पहले वह 2012 में मिस यूनिवर्स बनीं तो 2015 में भी ताज उनके सिर सजा था। न्यूजबाइट्स प्लस: करण जल्द 7 साल बाद निर्देशक के तौर पर रॉकी और रानी की प्रेम कहानी से वापसी करने जा रहे हैं। 28 जुलाई को सिनेमाघरों में दस्तक देने वाली इस फिल्म में रणवीर सिंह और आलिया भट्ट मुख्य भूमिका में नजर आएंगे।

उर्वशी रौतेला बॉलीवुड की उन अभिनेत्रियों में शुमार हैं, जो आए दिन किसी न किसी वजह से सुर्खियों में बनी रहती हैं। हाल ही में अभिनेत्री ने अपने नए प्रोजेक्ट से जुड़ी जानकारी साझा की है, जिसके बाद से प्रशंसक काफी उत्सुक हो गए हैं। दरअसल, उर्वशी जल्द ही करण जौहर के साथ पहली बार काम करने जा रही हैं। अभिनेत्री ने सोशल मीडिया पर पोस्ट साझा कर इस नई शुरुआत के बारे में प्रशंसकों को बताया है। उर्वशी ने इंस्टाग्राम पर फूलों के गुलदस्ते की तस्वीर साझा करते हुए बताया है कि वह करण के धर्मा प्रोडक्शंस के साथ कुछ बहुत ही रोमांचक चीज की शूटिंग कर रही हैं। यह अभिनेत्री का धर्मा प्रोडक्शंस के साथ पहला सहयोग है और अभी इसके बारे में अधिक जानकारी सामने नहीं आई है। हालांकि, अभिनेत्री की इस पोस्ट के बाद से प्रशंसक फिल्म के बारे में अधिक जानकारी सामने आने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। प्रशंसक दे रहे अभिनेत्री को बधाई उर्वशी को धर्मा के साथ काम करने की जानकारी मिलने के बाद से ही उनके पोस्ट पर प्रशंसक उन्हें बधाई दे रहे हैं। एक ने लिखा, आपके लिए बहुत खुश हूँ, बहुत-बहुत बधाई तो दूसरे ने लिखा, आपको आने वाली सभी फिल्मों के लिए शुभकामनाएं, आगे भी आपको ऐसे ही सफलता मिलती रहे। एक अन्य ने लिखा, आप इस बात का अंदाजा भी नहीं लगा सकती कि हम आपके लिए कितने खुश हैं। अब इंतजार नहीं होता। इन फिल्मों में नजर आएंगी उर्वशी: उर्वशी जल्द ही फिल्म 365 में नजर आए अभिनेता मिशेल मोरोन के साथ हॉलीवुड में डेब्यू कर सकती हैं। इसके अलावा वह संपत नंदी की ब्लैक रोज और राम पोथिनेनी के साथ एक फिल्म में नजर आएंगी। वह रणदीप हुड्डा के साथ एक भी एक फिल्म का हिस्सा हैं। हाल ही में अभिनेत्री जेसन डेरुलो के साथ एक न्यूजिक वीडियो में काम किया है, जो भी जल्द ही रिलीज होने के लिए तैयार है।

क्या ऋषभ शेट्टी के साथ कांतारा 2 में दिखेंगे नवाजुद्दीन सिद्दीकी?

पिछले साल आई कन्नड फिल्म कांतारा की अब तक चर्चा होती है। ऋषभ शेट्टी की इस फिल्म की हर ओर तारीफ हुई थी



और अब प्रशंसक इसके सीक्वल का इंतजार कर रहे हैं। पिछले साल जब नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने ऋषभ के साथ कुछ तस्वीरें शेयर की थीं तो कयास लग रहे थे कि कांतारा 2 में नवाज नजर आ सकते हैं। अब नवाज ने इस साझेदारी की संभावनाओं पर बात की है। उन्होंने ऋषभ संग दोस्ती पर भी बात की। पिछले साल कांतारा की टीम से मिले थे नवाज: पिछले साल दिसंबर में नवाज ने ऋषभ और कांतारा की टीम से मुलाकात की थी। इस मुलाकात की तस्वीरें साझा करते हुए उन्हें लिखा था, ऋषभ शेट्टी, प्रमोद शेट्टी और टीम कांतारा के साथ मेरे घर पर मुलाकात करना अद्भुत था। ऋषभ और मेरे बीच कई बातें समान हैं, जिन पर हम लंबी बातें कर सकते हैं। ऋषभ से मुलाकात पर बात पर नवाज ने बताया, ऋषभ और उनके दोस्त थिएटर में काफी काम करते हैं। खास बात यह है कि हमारे गुरु एक ही हैं। हम एक-दूसरे को पहले से जानते हैं। हम पहले भी बात कर चुके हैं, इसलिए जब वह यहां आए तो वह मेरे यहां आए और हमने काफी बातें कीं। अच्छी बात ये है कि वह अब भी थिएटर से जुड़े हुए हैं, अपनी जड़ों से जुड़े हुए हैं। कांतारा 2 पर यह बोले नवाज: नवाज और ऋषभ की मुलाकात के बाद कयास लग रहे थे कि वह कांतारा 2 से जुड़ सकते हैं। क्या इस प्रोजेक्ट के बारे में भी दोनों के बीच कोई बातचीत हुई है? इस पर नवाज ने कहा, इस बारे में मैं अभी कुछ नहीं कह सकता, लेकिन हम उम्मीद कर सकते हैं। मैं उनके साथ क्यों काम नहीं करना चाहूंगा? वह एक बेहतरीन अभिनेता, निर्देशक हैं। उनकी पूरी टीम काफी प्रतिभाशाली है। कांतारा को बॉक्स ऑफिस पर मिली थी शानदार सफलता: 16 करोड़ रुपये के बजट में बनी कांतारा ने बॉक्स ऑफिस पर लगभग 450 करोड़ रुपये कमाए थे। यह फिल्म नेटपिलक्स पर मौजूद है। फिल्म में ऋषभ ने शिवा नाम के एक युवक का किरदार निभाया, जिसका परिवार पीढ़ियों से जंगल के देवता की पूजा-अनुष्ठान करता आया है। कांतारा 2 की शूटिंग जल्द शुरू होने वाली है। फिल्म में रजनीकांत के होने की भी चर्चा है। उधर, नवाज इन दिनों फिल्म जोगी रा सारा रारा का प्रमोशन कर रहे हैं।

घर का सोफा हो गया है गंदा ? तो बिना वैक्यूम क्लीनर ऐसे कर लें साफ, आ जाएगी नए जैसी चमक



आजकल अधिकतर घरों में सोफा सेट रखा जाता है। क्योंकि ये न सिर्फ आरामदायक होते हैं, बल्कि घर का लुक भी बदल डालते हैं। हालांकि जब ये गंदे हो जाते हैं तो उन्हें घर में रखने में शर्म आने लगती है। कुछ लोग सोफे की गंदगी को छिपाने के लिए चादर का इस्तेमाल भी करते हैं। लेकिन अगर हम आपसे कहें कि आपका सोफा फिर से नया जैसा हो सकता है, वो भी घरेलू चीजों की मदद से, तो शायद आप चौंक जाएंगे। लेकिन यह सच हो सकता है, क्योंकि हमारे पास एक ऐसा नुस्खा है, जिसका इस्तेमाल करके आप अपने सोफे को फिर से नए जैसा बना पाएंगे। आजकल ज्यादातर घरों में फ़ैब्रिक वाले सोफे का इस्तेमाल किया जा रहा है। क्योंकि ये दिखने में काफी सुंदर होते हैं और कमरों को भी अट्रैक्टिव लुक देते हैं। बैठने में भी आरामदायक होते हैं। हालांकि इनकी सफाई करना एक टेढ़ी खीर होता है। अगर आपके पास भी फ़ैब्रिक वाला सोफा है, जिसपर गंदगी जमी हुई है तो चिंता न करें। बस कुछ आसान टिप्स को फॉलो करें। साबुन से बनाएं घोल फ़ैब्रिक वाले सोफे की सफाई के लिए आपको सबसे पहले नहाने वाले साबुन का कम से कम 5 चम्मच चूरा लेना होगा। इसके बाद आपको एक कप में गर्म पानी लेना होगा और उसमें साबुन का चूरन डालना होगा। साबुन का चूरन मिलाने के बाद इसे मिलाकर एक घोल तैयार कर लें। फिर इस घोल में दो चम्मच अनोनिया या फिर सुहागा डालें। ये सब हो जाने के बाद घोल को ठंडा कर लें। फिर इस घोल में स्पंज या किसी कपड़े को डालकर भिगोएं और इससे गंदे सोफे को साफ कर लें।

बुद्ध पब्लिकेशन ऑफसेट एण्ड प्रिन्टर्स

सिद्धार्थनगर का सबसे बड़ा प्रिन्टींग पब्लिकेशन हाउस... प्रिन्टींग, ऑफसेट, डिजाइनिंग, ब्रोचर्स, कार्ड्स, फ्लायर्स, बुक्स, एड्स, पोस्टर, कलर फोटो, कलर डिजिटल कार्ड, डिजिटल वेब पेज, बैंक फार्म, विकेट-टीरो एजेंडरी, नौजद नमूनाकरपुर, सिद्धार्थनगर (उ.प्र.)

795951917, 9453824459